विज्ञान समिति, उदयपुर

स्वर्ण जयन्ती समारोह

संस्थापक डॉ. के. एल. कोठारी

के

जीवन यात्रा की 8 दशकीय परिसम्पन्नता

पर प्रकाशित स्मारिका

साकार सपना

विज्ञान समिति उदयपुर

रोड़ नं. 17, अशोकनगर, उदयपुर – 313001

फोन नं. : 0294–2411650, 2413117

E-mail : samitivigyan@gmail.com | Website : vigyansamitiudaipur.org

साकार सपना

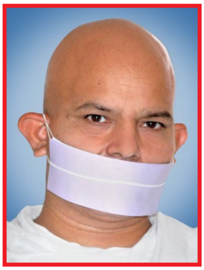

संदेश

12 जून 2015

अर्हम्

जन्म लेना एक सामान्य बात है, किन्तु कलापूर्ण जीवन जीना विशेष बात होती है। जो व्यक्ति संयम और परोपकार से युक्त जीवन जीता है, उसका जीवन धन्य बन जाता है।

डॉ के.एल. कोठारी एक प्रबुद्ध व्यक्ति हैं। विज्ञान समिति, उदयपुर से वे जुड़े रहे हैं। ज्ञात हुआ कि उनके जीवन के आठ दशकों की परिसंपन्नता के प्रसंग में विज्ञान समिति, द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कोठारी जी खूब आध्यात्मिक विकास करते रहें। प्रस्तुत स्मारिका पाठकों को आध्यात्मिक पोषण देने वाली सिद्ध हो। शुभाशंसा

बन्दीपुर (नेपाल)

आचार्य महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
प्रधान कार्यालय–3,पोचुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता–700 001
दूरभाष : (033) 2235 7956 2234 3598 फैक्स : 2234 3666
संपर्क सूत्र– हेमन्त बैद – 9672996960
Email - campoffice13@gmail.com

कैलाश मेघवाल
अध्यक्ष
राजस्थान विधान सभा

सत्यमेव जयते

टेलीफैक्स (कार्या) : 0141–2744321
दूरभाष (निवास) : 0141–2220354
: 0141–2221390
निवास : 50, सिविल लाइन्स,
जयपुर 302005

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि विज्ञान समिति उदयपुर अपने स्वर्ण जयन्ती एवं संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी के जीवन के स्वर्णिम आठ दशक पूर्ण करने पर स्मारिका का प्रकाशन कर रही है।

सामान्य जनमानस को विज्ञान की जानकारी एवं स्वैच्छिक सेवा की भावना से स्थापित विज्ञान समिति प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, अनुभवी बहुआयामी समर्पित सदस्यों के योगदान से आज पूरे देश में अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब हुई है। डॉ. कोठारी ने महिला सशक्तीकरण एवं महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा करने की दिशा में जो कार्य किए वे अनुकरणीय हैं। समिति के संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी का सेवाभावी एवं सक्रिय जीवन हम सब के लिए प्रेरणादायी है तथा ऊर्जा का संचरण करने वाला है।

मैं डॉ. कोठारी के दीर्घ जीवन की मंगलकामना करते हुए प्रकाश्य स्मारिका की सफलता की कामना करता हूँ साथ ही आशा करता हूं कि डॉ. कोठारी के जीवन से प्रेरणा लेकर युवा पीढ़ी मानव सेवा में समर्पित भाव से कार्य करते हुए समाज को नई दिशा प्रदान करें।

कैलाश मेघवाल

चंद्रसिंह कोठारी
महापौर

फोन : 2410323 (O)
93525–00230(M)
नगर निगम, उदयपुर (राज.)

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विज्ञान समिति की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में तथा संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी जी के आठ दशकीय पूर्णता के अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री कोठारी जी के स्वैच्छिक सेवा भाव से समिति ने विज्ञान के प्रचार–प्रसार एवं महिला सशक्तीकरण की दिशा में कई आयाम स्थापित किये तथा भविष्य में भी समिति सदस्यों के सहयोग से प्रेरणास्पद कार्य किए जाते रहेंगे।

इसी कामना के साथ ही स्वर्ण जयन्ती समारोह पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

चंद्रसिंह कोठारी

P.N. Bhandari
I.A.S.(R.)
Former Addl. Chief Secretary Rajasthan
Former Vice Chancellor, Udaipur University
Former Chairman, RSEB
Member ADvisory Commitee, RERC
Advocate, Rajasthan High Court

307-309, Ganpati Plaza
M.I. Road, Jaipur 302 001
Tel: (O) 5115556, 2389348, 2389349, 5113333
Fax : 0141 - 2389351
Mob. : 93511 52311
E-mail : pkajaipur@pka.co.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि डॉ. के.एल. कोठारी के 80 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर एक स्मरणिका प्रकाशित की जा रही है।

पिछले कई दशको से मेरा डॉ. कोठारी से निकट का संपर्क रहा है। विशेष रूप से जब मैं उदयपुर विश्वविद्यालय में कुलपति के पद पर था, तब मुझे उनकी कार्यशैली को नजदीक से देखने का अवसर मिला । वे अत्यन्त मिलनसार व सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। वरिष्ठतम पदों को सुशोभित करते हुए भी उन्होंने स्वयं को हमेशा अहंकार से दूर रखा है।

विज्ञान समिति के संस्थापक होने के नाते इस समिति के क्रिया–कलापों को व्यापक स्तर पर पहुंचाने में उनका विशेष योगदान रहा है। लोक विज्ञान के निरन्तर प्रकाशन से विज्ञान का प्रचार–प्रसार सामान्य लोगों तक पहुंचा है तथा ग्रामीण विकास की दिशा में भी समिति के प्रकाशन से सभी लोग लाभान्वित हुए हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि डॉ. कोठारी से प्रेरणा लेकर उनके अन्य सहयोगी भी उनके संकल्प को निरन्तर आगे बढ़ाते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित

पी.एन.भण्डारी

vedanta

संदेश

विज्ञान समिति उदयपुर का स्वर्ण जयन्ती समारोह तब और विशेष बन जाता है जब उसमें उसके संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी की 80 वर्षीय सतत् सेवा भावना और कर्मशीलता की सुखद सौरभ का समावेश हो।

विज्ञान समिति से मेरा जुड़ाव मेरे सम्मानीय निदेशक श्री एच.वी. पालीवाल के परामर्श से हुआ। वे उस समय विज्ञान समिति के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे थे। मुझे विज्ञान समिति के संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी की सूझ–बूझ, कार्यकुशलता व सद्व्यवहार ने प्रभावित किया जिससे मैंने विज्ञान समिति की सदस्यता ग्रहण की तथा अनेक अवसरों पर सहभागिता दी। विज्ञान समिति के सर्वांगीण विकास में मेरी सदैव रुचि रही अतः मैंने यथाशक्ति सहयोग दिया और दिलाया। मैं समिति की स्वैच्छिक भावना और मैत्री पूर्ण वातावरण का श्रेय भी डॉ. कोठारी को देना चाहता हूं। इस प्रसंग पर प्रकाशित ग्रंथ के द्वारा मैं डॉ. कोठारी के सक्रिय योगदान को रेखांकित करते हुए शुभकामनाएं प्रकट करता हूं।

अखिलेश जोशी
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड

Hindustan Zinc Limited
Registered Office : Yashad Bhawan, Udaipur (Rajasthan) - 313 004
T +91-294 660 4000-02 **F** +91-294 242 7734 www.hzlindia.com
CIN : L27204RJ1966PLC001208

विज्ञान समिति के संस्थापक

डॉ. के. एल. कोठारी

परिचय-दर्पण

आत्मज : स्व. श्री शेषमलजी
स्व. श्रीमती कज्जूदेवी

जन्मतिथि : 30 जून 1935

जन्म स्थान : केलवा जिला राजसमन्द (राज.)

शिक्षा : एम.एस सी. (वनस्पति विज्ञान)
पी.एच डी (पादप व्याधि विज्ञान)

व्यक्तित्व : सत्यनिष्ठ, कर्मनिष्ठ, संकल्पवान, मनीषी, चिन्तक, प्रेरक, अन्वेषक दूरदर्शी, कुशल नेतृत्व, सरल सहज, मधुर व्यवहार, उदार नवीन सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण कविहृदय, संगीतप्रेमी

संधारित पद : अनुसंधान सहायक, सहायक पादप व्याधिविज्ञ, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (पादप व्याधि विज्ञान)
अधिष्ठाता (राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर)
अधिष्ठाता (छात्र कल्याण) राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर

विज्ञान समिति के आयाम

स्थापना : 28–08–1959 ग्राम केलवा में

प्रमुख कार्य : 'लोकविज्ञान' मासिक पत्रिका प्रकाशन, मशरूम उत्पादन, वर्मीकम्पोस्ट, पौधारोपण, सेमिनार,

साहित्य प्रकाशन, महिला सशक्तीकरण, विशेषज्ञ व्याख्यान, ग्रामोदय, प्रतिभा प्रोत्साहन, चिकित्सा शिविर, कौशल प्रशिक्षण

समाज सेवा के सोपान

- मेवाड़ सहायता समिति : संस्थापक सदस्य एवं सचिव
- महावीर इन्टरनेशनल उदयपुर : संस्थापक सदस्य एवं अध्यक्ष (1998–2000)
- महावीर विकलांग सहायता समिति : संस्थापक सदस्य
- महावीर जैन परिषद, उदयपुर : संस्थापक सदस्य
- तुलसी निकेतन समिति, उदयपुर : आजीवन सदस्य
- जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा : अध्यक्ष 1972–81 व 1984–86

सम्मान एवं अवार्ड

- भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव महासमिति राजस्थान – 1978
- तेरापंथ युवक परिषद् – 1982
- आईसीएआईआर मक्का प्रायोजना – 1994
- राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय – 1995
- महावीर इन्टरनेशनल – 1998, 2000
- महावीर जैन परिषद् – 1999
- रोटरी क्लब, उदयपुर – 1988–2000
- तुलसी निकेतन समिति – 2000
- सोसायटी ऑफ माइकोलोजी एंड प्लान्ट पैथोलॉजी – 2001
- बोधि सम्मान : भंवरलाल कर्णावट फाउण्डेशन – 2013

पारिवारिक परिवेश

- परिणय : 18 नवम्बर 1957
- जीवन साथी : श्रीमती विमला कोठारी, एम.ए., बी.एड.
- पुत्रियां : रेणु, एम.एससी., पीएच.डी., लीना, बी.एससी., एम.ए.
- पुत्र : पवन, बी.एससी., पराग, बी.टेक

संपर्क : 5, दर्शनपुरा, उदयपुर 313002
फोन न. 0294–2414002
मोबाइल 09351555002

कुंदन और विज्ञान समिति

डॉ. एच.एन.एस. भटनागर
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (से.नि.)
मेडिसीन विभाग, आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज, उदयपुर

1959 में डॉ. के.एल. कोठारी ने विज्ञान समिति का क्या स्वप्न देखा, वे ही इसके ज्ञाता है और वे ही इसको समझा सकते हैं। आज इस चर्चा के लिए यह प्रश्न उपयुक्त है कि क्या उनका स्वप्न साकार हुआ या नहीं ? मेरी पहली पहचान विज्ञान समिति से 1968–69 में हुई जब डॉ. के.बी. शर्मा ने इसका सदस्य बना बनाया। उस समय विज्ञान समिति का कार्यालय वेटनरी हॉस्पिटल में डॉ. के.बी. शर्मा के निवास के एक कमरे में चलता था। उस समय एक पत्रिका 'लोक विज्ञान' के नाम से निकाली जाती थी और 4–5 सदस्य इस कार्य में दिन रात लगे रहते थे। मेरे पास अपने व्यवसाय आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज में सरकारी नौकरी होने से समय का अभाव ही रहता था। मैं यदा–कदा विज्ञान समिति की पिकनिक में डॉ. के.बी. शर्मा के आग्रह से चला जाता था और उस स्थान के रोगियों को अपनी सलाह एवं चिकित्सा प्रदान कर देता था। साथ ही सब सदस्यों के साथ का आनन्द प्राप्त करता था।

समय के साथ किस प्रकार भाई कुन्दन कोठारी तथा अन्य सदस्यों ने मिलकर, प्रयास कर, अशोकनगर में सरकार से जमीन प्राप्त कर, आज का भवन निर्माण करवाया। इसमें परिश्रम एवं लगन सामने नजर आती है। यह सब डॉ. कुन्दन कोठारी की सूझ–बूझ एवं कठोर परिश्रम का परिणाम हैं। सदस्यों में इच्छा जाग्रत करना एवं उनको कार्य में लगे रहने की प्रेरणा देने का कठिन कार्य का निर्वाह उन्होंने किया और विज्ञान समिति की प्रगति में अपनी नौकरी एवं जीवन की कठिनाइयों को कभी मार्ग में नहीं आने दिया। मैं इतना ही कह सकता हूं की आज जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है वह डॉ. कुन्दन कोठारी एवं डॉ. के.बी. शर्मा के कठिन परिश्रम का फल है।

आज विज्ञान समिति की सदस्य संख्या 125–150 है और अधिक से अधिक सदस्य इसके कार्यक्रमों में सहभागिता कर इसे प्रगति के पथ पर ले जाते रहेंगे और भाई कुन्दन कोठारी के स्वप्नों को साकार करते रहेंगे। इस अवसर पर सभी सदस्यगण भी बधाई के पात्र हैं।

डॉ. कुन्दन कोठारी ने जो कुछ विज्ञान समिति को दिया एवं प्राप्त किया उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। संघर्ष करते करते अपनी आयु के 80 वर्ष पूरे करने पर उन्हें एवं उनके परिवार को बधाइयां एवं सुनहरे भविष्य के लिए शुभकानाएं देते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है।

समर्पित समाज सेवी एवं सुधारक

प्रोफेसर डॉ. के.एल. कोठारी

डॉ. आर.एल. जैन
अधिष्ठाता (से.नि.) विधि महाविद्यालय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रसन्नता का विषय है कि विज्ञान समिति, उदयपुर के संस्थापक प्रोफेसर डॉ. के.एल. कोठारी सा. के 8वें दशक का जन्म दिवस विज्ञान समिति के प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। गत करीब 35 वर्षों से आपका निकट संपर्क मुझे प्रेरित करता है कि इस अवसर पर अपने विचारों को अभिव्यक्ति दूं।

उदयपुर के जाने माने व्यक्तित्व और विज्ञान समिति वाले कोठारी सा. की गणना उन विरले व्यक्तियों में की जा सकती है जिन्होंने गृहस्थाश्रम के संपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी समाज सेवा और सुधार का लक्ष्य निरन्तर प्रज्जवलित रखा।

ज्ञातव्य है कि केलवा (राजसमन्द) ही प्रो. के.एल. कोठारी सा. की जन्मभूमि और विज्ञान समिति की भी जन्मभूमि है। केलवा तेरापंथ धर्मसंघ का सारनाथ है। आपके पिता श्री केलवा जमींदारी में एक अच्छे प्रशासक रहे। उनके स्व–निर्मित काव्यों का बुलन्दी के साथ गान का मैं प्रत्यक्ष श्रोता रहा हूँ और विरासत में डॉ. कोठारी सा. को प्राप्त कवित्व के हम सभी साक्षी है।

कृषि विज्ञान में उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् कोठारी सा. सन् 1958 से दिसम्बर 1944 तक राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के शैक्षणिक एवं प्रशासकीय पदों पर सेवारत रहें। कृषि विज्ञान के क्षेत्र में आपका नाम राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर अनेक पुरस्कारों एवं सम्मान् से नवाजा गया। किन्तु विज्ञान समिति आपके मन से कभी ओझल नहीं हुई और विश्वविद्यालय द्वारा आग्रह के बावजूद भी आपने 6 माह पूर्व ही सेवानिवृति ले ली एवं तत्पश्चात् तन, मन और धन से विज्ञान समिति का सिंचन किया।

स्वैच्छिक सेवा का समवाय विज्ञान समिति आपके कृतत्व का प्रत्यक्ष दर्पण है। एक समय था जब इस संस्था का कोई स्थान नहीं था । आज 20,000 वर्ग फीट में विस्तृत इसके परिसर में वाटिका, चार हॉल और कार्यालय भवन हैं। भारतीय इस्पात प्राधिकरण के चेयरमेन, राजस्थान के मुख्य सचिव एवं मुख्य इंजीनियर जैसे व्यक्तित्व ने इसका नेतृत्व किया । विभिन्न संकायों के प्रोफेसर, समाज के गणमान्य व्यक्ति इसके संरक्षक, सहयोगी और सक्रिय सदस्य हैं।

विज्ञान समिति ने समय समय पर केन्द्रीय एवं राज्य सरकार की परियोजनाओं की सफलतापूर्वक कार्यान्विति की हैं इनमें प्रमुखतः इडारा, सामाजिक–आर्थिक सर्वे, सामाजिक वानिकी, स्वास्थ्यकर्मी योजना, मलेरिया उन्मूलन, मेवाड़ दुर्भिक्ष सहायता, पोलियो टीकाकरण, मशरूम

उत्पादन तकनीकी, कृषि विस्तार आदि को रेखांकित किया जा सकता है।

समाज सेवा एवं समाज सुधार की दिशा में स्वैच्छिक स्तर पर विज्ञान समिति में आपने अनेक प्रक्रम प्रारम्भ किए हैं जिनमें महिला सशक्तीकरण, महिला उद्यमिता प्रशिक्षण, महिला स्वयं सहायता समूह, अभावग्रस्त को सहायता, छात्रवृत्ति, जीवन पच्चीसी आदि नियमित कार्यक्रमों में ग्रामीण महिलाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रहती है। इसके अतिरिक्त धर्म–दर्शन वार्ता एवं प्रबुद्ध चिंतन, निःशुल्क जांच एवं चिकित्सा शिविर भी नियमित रूप से संचालित होते हैं। इस प्रकार विज्ञान समिति के प्रांगण में प्रतिदिन मेले सा माहौल देखा जा सकता है।

विज्ञान समिति के कार्य–कलाप एक खुली पुस्तक है जिसे मासिक रिपोर्ट, लोक विज्ञान, श्रद्धा, लहर आदि नियमित प्रकाशनों से जाना जा सकता है। इस स्वैच्छिक सेवा संस्थान से जुड़ा हुआ प्रत्येक व्यक्ति अपने को आलोकित महसूस करता है और अन्य भी जुड़ने की चाह रखता है।

उपर्युक्त संक्षिप्त अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में यह कहना अत्युक्त नहीं होगा कि डॉ. कोठारी सा. का समाज सेवा एवं समाज सुधार के प्रति दृढ़ संकल्प, समर्पण, लग्न, करुणा, मधुर व्यवहार, सरलता एवं सहजता विज्ञान समिति की रग–रग में प्रतिबिम्बित है। इनकी सज्जनता का अनुचित लाभ भी उठाया गया है किन्तु सज्जन अपनी सज्जनता कैसे छोड़ सकता है और यही बात इनके साथ भी है।

आचार्य चाणक्य ने कहा है –

असारे खलु संसारे सार मेतत् द्वयम्।

साहित्य रसा स्वादन संगति सुजने जनाः ।।

विज्ञान समिति में इन दोनों का फलित देखा जा सकता है। प्रतिदिन ज्ञानीजन की संगति जुड़ती है और कोठारी सा. 10.30 बजे से 2 बजे तक साहित्य रसास्वादन के साथ जरूरतमंदों को मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। डॉ. कोठारी सा. स्वस्थ एवं शतायु हों, यह क्रम निरन्तर चलता रहे और विज्ञान समिति शतशाखी बने। जीवन को रसमय बनाने वाली संगीत विधा का भी विकास हो।

विज्ञान प्रचार–प्रसार के महानायक

डॉ. के.एल. कोठारी

डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी
वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी
राजकीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर

डॉ. कोठारी सा. से मेरी पहली मुलाकात विज्ञान समिति के एक कार्यक्रम में हुई थी । तभी महसूस हो गया था कि यह व्यक्तित्व ऊर्जा का स्रोत, मार्गदर्शक, प्रेरणा–पुंज और इन सब से कहीं अधिक सरल व अपनत्व से ओत–प्रोत व्यक्तित्व है। डॉ. कोठारी सा. से बाद की मुलाकातों में मेरी यह धारणा और भी अधिक पुख्ता होती गई। मुझे अपने आप पर गर्व होता है कि विगत 22 वर्षों से मैं न सिर्फ ऐसे महान् व्यक्तित्व के संपर्क में हूँ बल्कि उनका वरद हस्त व आशीर्वाद हमेशा मुझ पर बना रहता है।

अब, जब भी डॉ. कोठारी सा. से मिलता हूँ, मुझमें एक नई ऊर्जा का संचरण सा होने लगता है। कहीं अंदर से आवाज आती है, 'कुछ रचनात्मक किया जाए'। यही तो असर है डॉ. कोठारी सा की उपस्थिति मात्र का । "अब आगे क्या करें ?", "क्या नया किया जा सकता है ?" जैसी सोच ही डॉ. कोठारी के व्यक्तित्व को इतना प्रभावशाली बनाती है। उम्र के इस पड़ाव पर भी कुछ न कुछ नया करने की उत्कंठा ही डॉ. कोठारी के व्यक्तित्व को इतना विराट बनाती है।

विज्ञान के प्रचार–प्रसार के महानायक डॉ. के.एल. कोठारी के बहु–आयामी व्यक्तित्व को किसी एक क्षेत्र में सीमित नहीं किया जा सकता है। मूलतः कृषि वैज्ञानिक होते हुए भी आपने कृषि विकास व पशुपालन के साथ–साथ ग्रामीण विकास, आजीविका मिशन, स्वरोजगार मुखी कार्यक्रम, महिला सशक्तीकरण , आध्यात्मिकता आदि में रुचि लेकर अपना अमूल्य योगदान दिया है। विज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने में आपने अपना संपूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को एक मंच पर एकत्रित कर विज्ञान समिति के रूप में आपने समाज को जो अमूल्य तोहफा दिया है जिससे निरन्तर नवीनतम तकनीकियों को आमजन तक पहुंचाने, उन्हें लाभान्वित करने के उत्कृष्ट कार्य को मैं सैल्यूट करता हूं। विज्ञान के साथ–साथ आपकी साहित्य पर भी अच्छी पकड़ रही है। अपनी कविताओं के जरिए भी आपने समाज में नई चेतना जागृत करने का सराहनीय कार्य किया है।

मेरा शब्द–संसार इतना विस्तृत नहीं है कि मैं डॉ. कोठारी की उपलब्धियों व योगदान को शब्दों में गूंथ सकूं। मैं तो सिर्फ यह कह सकता हूं कि विज्ञान के प्रचार–प्रसार में युगों–युगों तक डॉ. कोठारी सा. के योगदान को चाह कर भी भुलाया नहीं जा सकता । आप के योगदान का अभिनन्दन करते हुए, मैं तो सिर्फ यही कह सकता हूं –

फौलाद का है मस्तिष्क मेरा, झुकता नहीं किसी के आगे,

हवा में लहलहाते हाथ मेरे, नमते नहीं किसी के आगे,

पर जब नाम सुनता हूं, डॉ. के.एल. कोठारी सा. का,

मन-मस्तिष्क ही क्या, शरीर भी झुकता है उनके आगे

आपके स्वस्थ, सक्रिय एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामनाओं के साथ आपको शत्–शत् नमन।...

कुंदन थू कुंदन है

कुंदन थू कुंदन है, विज्ञान रो कुंदन है

कुंदन थू कुंदन है, मेवाड़ रो कुंदन है

कुंदन थू कुंदन है, विज्ञान रो चंदन है

कुंदन थू कुंदन है, मेवाड़ रो चंदन है

मेवाड़ में जदी लोग विज्ञान रो नाम नी जाणता

वदी थे मेवाड़ में विज्ञान समिति पैदा कर दीदी

आज तक मेवाड़ रा लोग छपनीया रा काल ने याद करता हा

पण अबे मेवाड़ रा लोग छपनीया री विज्ञान समिति ने याद करेळा

विज्ञान समिति में नरई हीरा मोती है

कुंदन थूं अणा हीरा मोतिया में कुंदन है

कुंदन थू मेवाड़ रे कोठार रो कोठारी है

कुंदन थू विज्ञान रे कोठार रो कोठारी है

कुंदन थू, अस्सी री उम्र में पूरो देवानंद लागे है

वो इज मस्ती, वो इज चुस्ती, काम रो दीवानों लागे है

सुरेन्द्र सिंह पोखरणा

भूतपूर्व वैज्ञानिक

(भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो)

क्षमता, दक्षता और लगन का मूर्तरूप

इब्राहिम अली
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
वंडर सीमेन्ट, उदयपुर

प्रातः स्मरणीय डॉ. के.एल. कोठारी जी के 80वीं वर्षगांठ पर शतायु जीवन की मंगलकामना करते हुए प्रार्थना करता हूँ कि हमें उनका जीवंत मार्गदर्शन सदा मिलता रहे।

कौन कहता है हमने ईश्वर को देखा नहीं, अरे ! वे तो सदैव अलग–अलग रूप धरकर सदैव हमारे बीच में है सिर्फ हम ही नहीं पहचान पाते हैं। हालांकि मेरा और डॉ. कोठारी जी का यूं कोई सीधा कार्यक्षेत्र नहीं रहा, परन्तु अकसर हम लोगों का विभिन्न विषयों पर आयोजित होने वाली कार्यशालाओं आदि में मिलना हो जाता था, पर मैंने पाया कि यह व्यक्ति एक विरला है, जो ठान ले उसे हर हाल में पूरा करना और उसके लिए सतत् प्रयत्नशील रहना, अपनी सौम्यता, भाषायी माधुर्य एवं ज्ञान से दूसरे सामर्थ्यवान व्यक्ति से पूरा करवा लेने कि जो असीमित क्षमता, दक्षता और लगन उनमें देखी, ऐसे विराट् व्यक्तित्व के धनी रूप में ही ईश्वर सदा हमारे साथ रहता है, हमारा मार्गदर्शन करता है और हां, उनमें कोठारी जी भी एक है ।

उदयपुर से लगभग 80 किमी. की दूरी पर केलवा में आपका जन्म हुआ। स्कूली शिक्षा के बाद आपने कृषि महाविद्यालय से एम.एससी. एवं प्लांट पैथोलोजी में पीएच.डी. की, परन्तु यह सब इसलिए कि हम उन्हें अपने जैसा माने, न कि किसी विराट रूप में जाने । वरना आप ही बताये क्या केवल वे ही पीएच.डी. थे? कई ओर भी होंगे, उनके जहन में क्यों नहीं आया कि बदलते परिवेश की दशा व दिशा क्या होगी? इसका ज्ञान यथोचित रूप से सभी वर्गो को मिलना चाहिये । केवल उनके दिमाग में ही आया, फिर क्या था लग गये उस काम पर ।

विज्ञान क्या है? इसका लाभ क्या है? उपयोग क्या है? इन सबका विशद लेखन प्रारम्भ में स्मारिका के माध्यम से फिर गोष्ठियां, संवाद और विभिन्न विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन करना, विषय–विशेषज्ञों की विषयवस्तु पर व्याख्यान आयोजित करवाना, ये कोई साधारण काम नहीं परन्तु संभव तभी है जब इनका संचालन कोई असाधारण व्यक्तित्व कर रहा हो,कोई अवतारी पुरुष कर रहा हो। मुझे यह कहने में लेशमात्र भी हिचक नहीं है। उन्होंने कैसे यू.आई.टी. से जमीन ली होगी, फिर भामाशाहों को इकट्ठा करना, उनसे पुनीत कार्यो में योगदान करवाना, केवल वो ही कर सकता है जो हमें कुछ देने के लिए अवतार रूप में आया हो । सारे भामाशाह भी उनके नित्य पार्षद रूप में साथ आये हो ।

विज्ञान समिति की रचना वर्ष 1959 में करना, उनके मानद सदस्य के रूप में दायित्वों का निर्वहन करना वो भी 1–2 वर्ष नहीं, पिछले 56 वर्षो से बिना विश्राम किए हुए अनवरत रूप से लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये कृत संकल्पित व्यक्तित्व को मैंने अन्यत्र नहीं देखा। हमेशा नया करूं, इसी भाव को लेकर जिनकी जीवन यात्रा 80वें सोपान पर पहुंच चुकी है। कितने विषयों पर उन्होंने कार्य किया, उनका विस्तार तो संभव नहीं परन्तु स्मृति में है, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रचार–प्रसार, विज्ञान एवं दर्शन, महिला सशक्तीकरण, ग्रामीण महिला समूहीकरण, महिला प्रकोष्ठ, महिला चेतना शिविर, इन सबका सतत् संचालन कार्यशालाओं के, व्याख्यानमालाओं के प्रशिक्षण शिविर और न जाने क्या–क्या करते हैं आप ।

मैं तो उन्हें अपने पास पाकर धन्य हूँ, अभिभूत हूँ और नतमस्तक होकर नमन करता हूँ और आशा करता हूँ कि जिस उद्देश्य को लेकर आपने 'विज्ञान समिति' का गठन किया है उसका लाभ जनजीवन को सदा उपलब्ध होता रहे, यहीं मेरी शुभकामनाएं हैं ।

नामाक्षर से....

कु - कुल कोठारी, गांव केलवा में जन्में कुन्दन
न - न्यारा तुम्हारा मन-मंदिर, अर्पित अक्षत चन्दन
द - दक्ष हो ज्ञान में, व्यवहार में, आपका अभिनन्दन
न - नव चिन्तन से खिला विज्ञान समिति का नन्दन
ला - लालित्य कर्मनिष्ठा का, करते हम वन्दन
ल - लक्ष्य नारी उत्थान का, मुक्त किए कई बंधन
को - कोविद मित्रों के संग, खोला जनसेवा का द्वार
ठा - ठाट बाट से दूर, सादा जीवन उच्च विचार
री - रीति-नीति मनमोहक, किया जीवन को साकार।

प्रकाश तातेड़

डॉ. के.एल. कोठारी – जैसा मैं जानता हूं

महादेव दमानी
महाप्रबंधक
होटल दमानीज, उदयपुर

लक्ष्य की प्राप्ति का एक मात्र उद्देश्य लेकर चलने वाले व्यक्ति का नाम ही कुन्दन होना चाहिए। स्वैच्छिक सेवा की भावना को मूर्तरूप देने की क्षमता वाले डॉ. कुन्दन कोठारी के स्वभाव में तूफान सी गतिशीलता विशिष्ट महत्त्व की है। केलवा गांव में जन्मे अपने पिता श्री शेषमल जी के आदर्शों के प्रति समर्पित, निष्ठा से परिपूर्ण, स्वप्नदृष्टा के रूप में दुर्लभ व्यक्तित्व है डॉ. कुन्दन कोठारी। साधारण दिखने वाले असाधारण क्षमताओं से सराबोर इनकी सोच एक प्रेरक के रूप में प्रस्थापित है।

धैर्य की गहराई से सृजित प्राणस्वरूप विज्ञान समिति की स्थापना न केवल हमारे प्रान्त अपितु देश की जानी मानी संस्थाओं में चिन्हित है। डॉ. कोठारी की 55 वर्षों की तपस्या के कई आयाम हैं जिसमें न केवल विज्ञान समिति की स्थापना बल्कि अनेक गतिविधियों का समूह समाज के उत्थान में विशेष अतुलनीय स्थान रखता है।

संघर्षरत डॉ. कोठारी में सहजता की अविरल धारा है और शायद यही वजह है कि वे अपूर्व ऊर्जा से ओत प्रोत है। कभी क्रोधित न होने वाले, लगन के धनी, अहंकार एवं दुराग्रह से परे, शान्तिप्रिय, सदैव उनसे प्रेरणा प्राप्त की है। प्रशासकीय कुशलता की झलक आपकी अपनी शैली में है और यही कारण है कि विभिन्न विधाओं एवं क्षमता के विद्वान आपसे जुड़कर एक ही छत के नीचे अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं और वो भी निःस्वार्थ एवं निर्विवाद।

प्रेम के प्रति आपकी आस्था बुनियादी स्तम्भ की भांति है। मेरे अंतरंग मित्र होने से मैंने इन्हें अधिक जानने का प्रयास किया और मैं इतना आश्वस्त हो गया कि कुन्दन शहद की भांति मिठास से भरे हैं। प्रशंसा से परे इस कर्मयोगी का इतिहास सादगी से सराबोर, सही दिशा का मार्गदर्शन करता है। आपके जीवन की उपलब्धियों में शिक्षा, शासकीय सेवाएं, पत्र–पत्रिकाओं में शिक्षा, शासकीय सेवाएं, पत्र पत्रिकाओं का लेखन, सम्पादन, वाचन रोचक एवं सराहनीय है। स्वयं कृषि वैज्ञानिक के नाते विज्ञान जैसे गूढ़ विषय को जनसाधारण तक पहुंचाने की उपलब्धि विशेष ऊंचाई रखती है।

समाज एवं शहर की अनेक संस्थाओं से जुड़कर आपकी सेवाएं न केवल प्रभावशाली हैं बल्कि अनुकरणीय हैं। अस्तित्व के इस परम सौंदर्य के सुगन्धित पुष्प की भांति आप उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर सुस्वस्थ एवं शतायु बनकर परम शिखर पर पहुंचे, यही सर्वव्यापी प्रभु से प्रार्थना है। आपकी जन्म तिथि 30.6.2015 के शुभ दिवस पर मेरा सादर अभिनन्दन ।...

एक संघर्षशील व्यक्तित्व
डॉ. के.एल. कोठारी

डॉ. के. एल. तोतावत
प्रोफेसर (से.नि.) मृदा विज्ञान
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

डॉ. के.एल. कोठारी संघर्षशील, दृढ़निश्चयी, सेवा भावी, स्वप्नदर्शी व्यक्ति हैं। उनका संगठन कौशल तथा हौंसला अद्वितीय एवं सराहनीय है। किसी भी कार्य को हाथ में लेने पर उसे लक्ष्य तक पहुंचाने की कला में आप प्रवीण है।

सन् 1974 ई. की बात है। विश्वविद्यालय प्रशासन तथा कार्यकर्ताओं के मध्य विवाद तीव्र हो गया था। तत्कालीन वाइस चांसलर मनमानी पर उतर आये थे। डॉ. कोठारी शिक्षकों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे अतः उनके तथा वाइस चांसलर के मध्य कटु स्थितियां बनी हुई थी। इसी समय डॉ. कोठारी ने भविष्य की सोच करते हुए ''फिकुसा इन्टरप्राईजेज'' की स्थापना की। उन दिनों फिकुसा उदयपुर संभाग में एकमात्र टाइपराइटर सर्विस एवं विक्रेता संस्थान था । आपने परिश्रम, निष्ठा तथा सहयोग से फिकुसा को संभाग में लोकप्रिय बना दिया, यह आज भी नवीनीकरण के साथ चल रहा है। 1974 का यही समय था जब मेरा डॉ. कोठारी से सम्पर्क हुआ। यह संपर्क धीरे–धीरे प्रगाढ़ होता गया।

यों डॉ. कोठारी जी के पिताश्री श्री शेषमल जी जो एक आशुकवि तथा समाज सेवी थे, भी एक अच्छे वक्ता थे और समय समय पर तेरापंथ सभा भवन में अपनी स्वरचित कविता सुनाते रहते थे। उन्हें तेरापंथ सभा भवन उदयपुर में चातुर्मास काल में महाराज सा. के प्रवचन के दौरान सुनने का अवसर मिला था । वे समाज–सेवा के लिए डॉ. कोठारी जी को बराबर प्रोत्साहित करते थे और इनका भी रूझान इस ओर बराबर रहा। डॉ. के.एल. कोठारी श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज के लम्बे समय तक अध्यक्ष रहे तथा समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। वर्ष 1985 में धर्मसंघ के नवम आचार्य श्री तुलसी का उदयपुर में मर्यादा महोत्सव आयोजित हुआ। उस समय डॉ. कोठारी समाज के पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे, उस समय मैं भी तेरापंथ युवक परिषद का अध्यक्ष था और साथ साथ धर्म संघ का कार्य करने का अवसर मिला । आपके संगठन कौशल, कार्य करने की क्षमता और प्रतिभा के फलस्वरूप समाज में अच्छा प्रभाव था ।

डॉ. कोठारी बचपन से ही स्वप्नदर्शी तथा विचारशील रहे हैं। उनमें कुछ नया करने का विचार विद्यार्थीकाल से ही रहा। विज्ञान के प्रति आम आदमी की उत्कंठा तो है लेकिन अनभिज्ञता भी हैं। विज्ञान के महत्व को वे समझते थे। उनके मन में अगस्त 1959 में एक विचार पैदा हुआ कि इस हेतु एक संस्था होनी चाहिये जो विज्ञान के प्रचार–प्रसार तथा प्रवृतियों का कार्य करती हो। अपने साथियों से विचारों को साझा किया तथा कुछ मित्रों के साथ मिलकर एक स्वैच्छिक संस्था ''विज्ञान समिति'' की स्थापना अपने पैतृक ग्राम केलवा (वर्तमान जिला राजसमन्द) में की। इस कार्य में डॉ.

कोठारी की सहधर्मिणी श्रीमती विमला कोठारी तथा डॉ. के.बी. शर्मा का सराहनीय सक्रिय सहयोग रहा। बाद में विज्ञान समिति उदयपुर में कार्यरत हो गई। विज्ञान समिति आज 57 वर्षों में विशाल स्वयंसेवी स्वैच्छिक संस्था के रूप में जनसेवा के पथ पर एक वटवृक्ष की तरह खड़ी है।

इस विज्ञान समिति से मैं भी संबंद्ध हुआ । आज से तीन दशक पूर्व मैं विज्ञान समिति का आजीवन सदस्य बना । विज्ञान समिति की विभिन्न प्रवृतियों से अवगत हुआ। रुचि और सक्रियता बढ़ी। समिति द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं और कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया । डॉ. कोठारी एक सपना देखते हैं और अपने सहयोगियों से पूरा कर लेते हैं। यह उनके सकारात्मक सोच तथा गंभीर चिन्तन का परिणाम होता है। आज भी इस आयु में उनमें युवा की भांति जोश, उमंग और उत्साह है । विज्ञान समिति के कार्यक्रमों में सक्रियता से भागीदार होते हैं। समिति का सुन्दर, कलात्मक तथा उत्कृष्ट भवन है। यह हमारा पूजा स्थल है।

आदरणीय डॉ. कोठारी साहब अपने जीवन के आठ दशक पूर्ण कर नवें दशक में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर मेरी एवं मेरे परिवार की ओर से उनका अभिनन्दन तथा सक्रिय रहने तथा शतायु होने की हार्दिक शुभकामनाएं।

सेवा – सहायता में अग्रणी
डॉ. के.एल. कोठारी

कन्हैयालाल बापना

मेरा विज्ञान समिति से करीब 28 वर्ष का सम्बन्ध है। 28 वर्ष पूर्व मेवाड़ सहायता समिति का कार्यालय विज्ञान भवन में खुलां उस समय प्रथम बार विज्ञान समिति में मैंने प्रवेश लिया।

उसके बाद विज्ञान समिति के सदस्यों से परिचय चाय के समय हुआ। उसमें मुझे भी बुलाया जाता, जिससे समिति के सदस्यों से गहरा परिचय हो गया व सभी सदस्य अच्छी तरह मिलजुल कर रहने लगे।

उस समय विज्ञान समिति में दो कमरे बने हुए थे। बाहर कच्चा चबूतरा था। जिस पर मेवाड़ सहायता समिति का ऑफिस था। विज्ञान समिति का विकास करने में श्रीमान् कोठारी साहब तन–मन व समर्पित भावना से निरन्तर सेवा कर रहे हैं।

28 वर्ष पूर्व विज्ञान समिति अविकसित हालत में थी। अब ये सुसज्जित भवन में दिखने लगी है। उसका श्रेय श्रीमान् कोठारी साहब की लगन व सूझबूझ को है। आपकी 80 वर्ष की आनन्दमयी आयु पूर्णता पर हम आपका पूर्ण सम्मान करते हुए आपके भावी जीवन के प्रति शुभ भावनाएं प्रकट करते हैं। बहुत–बहुत धन्यवाद।

विज्ञान एवं जन कल्याण को समर्पित व्यक्तित्व

डॉ. सुरेन्द्र कुमार भटनागर
सहायक जिला रसद अधिकारी (से.नि.)

मैं डॉ. के.एल. कोठारी के सम्पर्क में समिति के प्रारम्भ से हूँ। उनका अपना चिन्तनशील व्यक्तित्व है। वर्ष 1959 में देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने ''देश के जन साधारण को विज्ञान की जानकारी कराई जावे'' का आह्वान किया। इस आह्वान मात्र से कोठारी सा. के हृदय में चिन्तन हुआ, इसी कारण 28 अगस्त 1959 को गांव केलवा में अपने सहयोगियों के साथ ''विज्ञान समिति'' की स्थापना के एक वर्ष पश्चात् समिति का कार्यालय उदयपुर स्थानान्तरित हुआ, तब से आज तक जन साधारण में विज्ञान के प्रचार–प्रसार व जन कल्याण के कार्यों के लिए समर्पित है।

समिति के माध्यम से 21 वर्ष तक ''लोक विज्ञान'' पत्रिका का त्रैमासिक व मासिक प्रकाशन कर कृषि, पशुपालन, बालविकास, गृहविज्ञान एवं सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित विषय के लेख प्रकाशित कर जन साधारण को नवीन तकनीकी जानकारियां दी गई। यह पत्रिका उस समय देश के नौ हिन्दी राज्यों में मान्यता प्राप्त थी व उन राज्यों में कई शालाओं व कॉलेजों में भिजवाई जाती थी। वर्ष 2007 से पुनः ''लोक विज्ञान'' का प्रकाशन 4 पृष्ठ में किया जाकर नियमित तकनीकी जानकारियां दी जा रही हैं।

समिति में समय–समय पर विभिन्न विभागों–विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, जनजाति कृषि एवं उद्यान, महिला एवं बालविकास, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि विश्वविद्यालय, आजीविका मिशन आदि से सम्पर्क रखकर अनेको संगोष्ठियां, शिविर, प्रदर्शनियां, वैज्ञानिक चर्चाएं आयोजित की, पुस्तकें, बुकलेट, पेम्पलेट, पोस्टर प्रकाशित किए गए। प्रशिक्षण केम्प भी आयोजित कर विज्ञान का जन साधारण में प्रचार–प्रसार एवं जनकल्याण के कार्य किए गए। जिससे कई लोग लाभान्वित हुए हैं। इसके अतिरिक्त समिति में पर्यावरण उद्यमित, मशरूम उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट व महिला सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। आज भी समिति में विभिन्न प्रकोष्ठों के माध्यम से विज्ञान व जन कल्याण हेतु कई कार्य किए जा रहें हैं। इन सभी कार्यों में डॉ. कोठारी सा. की अहम भूमिका है, समिति निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है व आज यह समिति उदयपुर में अग्रणि संस्थाओं में एक है।

समिति की स्थापना से ही डॉ. कोठारी की मूल भावना स्वैच्छिक सेवा रही है, प्रारम्भ से आज तक आपने अपने साथ समिति के कार्यों में कई विशिष्ट एवं विशेषज्ञ व्यक्तियों को समिति से जोड़ा है। ये सभी लोग स्वैच्छिक सेवा की भावना के साथ समिति में अपनी निरन्तर सेवाएं दे रहे हैं जो अपने आप में अनुकरणीय मिसाल है। डॉ. कोठारी सा. आज भी चिन्तनरत है, जिस कारण वह विभिन्न आयोजनों, उत्सवों, पर्वों व व्यक्ति विशेष पर अपनी कविताओं की रचना कर अपने विचारों से लोगों को लाभान्वित कर रहे हैं। डॉ. कोठारी समिति में प्रिय है व अत्यन्त सरल, सहृदय, दृढ़ निश्चयी, अध्यात्म में रूचि रखने वाले, मृदुभाषी एवं गरीब के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के धनी है।

मैं स्वयं एवं परिवार की ओर से 30 जून 2015 को उनके 80वीं. वर्षगांठ पर उन्हें बधाई व शुभकामनाएं देते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

समतामय व्यक्तित्व : डॉ. कोठारी

डॉ.बी.एल चावत
निदेशक आचार्य श्री नानेश समता महाविद्यालय, दांता

श्रीमान् प्रो. के.एल. कोठारी सा. के जीवन के सफलतम 80 वर्ष पूर्ण करने पर हृदय से शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य व शतायु होने की मंगल भावना । मैंने अपने जीवन में ऐसा समतामय व्यक्तित्व नहीं देखा। डॉ. कोठारी अनेक गुणों से सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी हैं। शांता, सौम्यता, मिलनसारिता उनके जीवन में कूट–कूट कर भरी है। मैं वर्ष 2006 में विज्ञान समिति का सदस्य मात्र उनके मधुर व्यवहार के कारण ही बना। उनके जीवन से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ हूं तथा अपने जीवन में भी उन गुणों को आत्मसात् करना चाहता हूं।। उनकी सोच व विचारधारा वैज्ञानिक है तथा किसी भी पहलू पर उनसे बातचीत करने पर संतोषप्रद उत्तर ही प्राप्त होता है। उनमें जो खूबियां हैं उनमें एक खूबी यह है कि वे पुराने गानों के बड़े शौकीन हैं व गुनगुनाते रहते हैं तथा मुझे भी प्रेरित करते रहते हैं। मैंने कभी उनको निराश व उदास होते नहीं देखा है।

मेरा विज्ञान समिति के अलावा भी उनसे सम्पर्क सुभाष नगर जैन सोसायटी के माध्यम से रहा है जिसके डॉ. कोठारी अध्यक्ष व कार्यकारिणी चुनावों में चुनाव अधिकारी रहते आये हैं। पिछले 20 वर्षों से सोसायटी के चुनाव उनकी देखरेख में ही सम्पन्न हो रहे हैं तथा वे सोसायटी के हर सदस्य की आस्था के केन्द्र हैं । एक बार मुझे भी उनके द्वारा सोसायटी का अध्यक्ष चुने जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सोसायटी के हर आयोजन में आपकी सक्रिय भागीदारी रहती है। यह कहा जा सकता है कि विज्ञान समिति ऐसे संरक्षक को पाकर धन्य है। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ। आपका जीवन हमारे लिए सदैव प्रेरणा स्रोत रहेगा ।...

कुंदन जिसमें है ढेर सारे गुणों की सुगन्ध!

डॉ. के. पी. तलेसरा
उप प्राचार्य (से.नि.)
बी.एन. कॉलेज, उदयपुर

शेक्सपीयर ने कहा है कि नाम में क्या रखा है। जब बात हो डॉ. कुन्दनलाल कोठारी की तो लगता है कि नाम में भी बहुत कुछ छुपा है। वे तपा हुआ कुन्दन हैं, खरा सोना । सोना भी ऐसा जिसमें सुगंध है, गुणों की सुगन्ध ।उनकी शैक्षिक एवं व्यावसायिक उपलब्धियाँ बहुत महत्वपूर्ण रही हैं पर इनके व्यक्तित्व के घनीभूत गुण असाधारण हैं। उनमें अन्तःप्रेरणा है बहुआयामी लोकसेवा की, वे लबरेज हैं सकारात्मक ऊर्जा से, गुण ग्राहकता उनमें कूट–कूट कर भरी है।, वे संबंधों को निश्छल स्नेह से शाश्वत करने की कला में पारंगत हैं, गहरी ज्ञान पिपासा है उनमें और प्राप्त ज्ञान को संप्रेषित करने की कला भी, वे दृढ़ निश्चयी हैं पर अहम्वादी नहीं, सिद्धान्तों में दृढ़ हैं पर दुराग्राही नहीं, संघर्षशीलता है पर कहीं भी वैमनस्य नहीं। "With malice towards none charity for all" उन पर पूरा पूरा खरा उतरता है यह वाक्य।

विज्ञान समिति उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं द्वारा निर्मित ऐसा अनुपम प्रकल्प है जिसे डॉ. कोठारी ने 55 वर्ष पूर्व प्रारंभ किया । यह संस्थान बहुआयामी लोक सेवा का सशक्त माध्यम है। शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान–लोकप्रियकरण, कृषि, ग्रामोत्थान, महिला सशक्तीकरण, प्रतिभा प्रोत्साहन आदि अनेक क्षेत्रों में समिति के सार्थक सहयोग–योगदान से निरन्तरता बनी हुई है। यह डॉ. कुन्दन कोठारी की विशेषता है, व्यक्तित्व का जादू है कि विषय–विशेषज्ञ, विधाओं के विद्वान, संवेदनशील समाजसेवी जो भी एक बार इनके संपर्क में आते हैं सदैव के लिये समिति के होकर रह जाते हैं। मैंने भी अनेक दशाब्दियाँ डॉ. कोठारी की छत्रछाया में इनका मधुर सान्निध्य और मंगल आशीर्वाद प्राप्त करते हुए व्यतीत करली हैं।

डॉ. कोठारी के लिए दीर्घ एवं स्वस्थ–प्रसन्न जीवन की मंगल कामनाएं और विज्ञान समिति भी स्वप्रेरित–स्वैच्छिक संवेदनशील सेवा के मार्ग पर नवीन ऊंचाइयां सबके सहयोग से अनवरत प्राप्त करे, इस आशा के साथ भाव–अभिव्यक्ति को विराम डॉ. कोठारी को समर्पित इन पंक्तियों के साथ –

भागा अंधेरा, छाई रोशनी दूर तलक, जमीं पर उतरा कोई आफताब है।
बंद आंखों में कितने ख्वाब हैं, सब के सब सच होने को बेताब हैं। ...

श्री कोठारी सा.
महिला सशक्तीकरण की मशाल

श्रीमती मंजुला शर्मा
प्रभारी महिला प्रकोष्ठ, विज्ञान समिति

इस पुरुष–प्रधान समाज में डॉ. के.एल. कोठारी ऐसे पुरुष है जिनके दिल और दिमाग में महिलाओं के प्रति पूरी इज्जत है तथा उन्हें बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए पूरी मेहनत से कोशिश कर रहे हैं।

विज्ञान समिति से मेरा जुड़ना एक संयोग ही था । सन् 2002 की एक सुहानी सुबह मैंने समाचार पत्र में विज्ञान समिति का विज्ञापन देखा–पढ़ा जिसमें ''स्क्रीन प्रिन्टिंग'' के प्रशिक्षण की सूचना थी । मैंने इस प्रशिक्षण में भाग लिया और सदैव के लिए समिति से जुड़ गई।

प्रशिक्षण के दौरान डॉ. कोठारी सा. के व्यक्तित्व से हम सब परिचित और प्रभावित हुए। जौहरी को जैसे हीरे की परख होती है, वैसे ही कोठारी सा. को इन्सानों की पहचान है। उन्होंने मुझ में क्या देखा–समझा कि विज्ञान समिति के महिलाओं सम्बन्धी प्रत्येक प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रमों में मुझे बुलाया जाता। मैं भी यथाशक्ति योगदान करती। इसी दौरान मैंने 'मेरी सहेली स्वयं सहायता समूह' का गठन एवं संचालन किया जिसमें निर्मित पिंड खजूर किशमिश चटनी बहुत ही लोकप्रिय हुई । यह सब विज्ञान समिति से जुड़ने का भी परिणाम था।

सन् 2008 का वर्ष मेरे जीवन में घोर अंधेरा लेकर आया जब एक दुर्घटना में मैंने मेरे पति को खोया और मैं स्वयं भी छह माह तक बिस्तर पर रही। तब डॉ. कोठारी सा. का सहृदयी, दयालु पक्ष मुझे देखने को मिला। आपने एक पिता की तरह मुझे और बच्चों को सम्बल प्रदान किया। विज्ञान समिति के अनेक सदस्यों ने मुझे उस दौर में पूरा स्नेह–सहयोग दिया, जो मैं कभी नहीं भूल सकती।

मैं कुछ स्वस्थ हुई, उन्हीं दिनों विज्ञान समिति में एक माह का प्रशिक्षण हुआ। डॉ. कोठारी सा. ने आग्रहपूर्वक कहा कि ये प्रशिक्षण आप कराएंगी। मैंने हिम्मत की । विज्ञान समिति से नई परिस्थितियों में फिर सम्बन्ध स्थापित हुआ।

मुझे विज्ञान समिति में प्रतिदिन आने और महिलाओं सम्बन्धी गतिविधियां प्रारम्भ करने का सुझाव दिया गया। श्रीमती पुष्पा कोठारी एवं समिति सदस्यों की प्रेरणा व सहयोग से यहां क्रमशः नवाचार महिला प्रकोष्ठ, वरिष्ठ महिला प्रकोष्ठ एवं ग्रामीण महिला शिविर के नियमित आयोजन सफलतापूर्वक होने लगे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से मैं 500–600 महिलाओं के संपर्क में आई। मेरा

ज्ञान, अनुभव एवं आत्मविश्वास बढ़ा। इन सब के लिए मैं आदरणीय कोठारी सा. एवं विज्ञान समिति की भी ऋणी हूं।

इस प्रकार डॉ. कोठारी महिला सशक्तीकरण की प्रकाशमान मशाल बनकर हमार पथ–प्रशस्त करते रहे हैं। मैंने आपकी प्रेरणा से 'स्वादिष्ट चटनियां' नामक एक पुस्तिका का लेखन किया जिसका विमोचन डॉ. कोठारी सा. के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। आपके ही प्रोत्साहन से मैं 'मेरी किचन से' पुस्तक का लेखन कर रही हूं।

विज्ञान समिति द्वारा प्रदत्त हिम्मत, स्नेह, सहयोग एवं विश्वास के बल पर मैं उत्तर प्रदेश की मूल निवासी एकल महिला होते हुए भी आत्मविश्वास से भरा जीवन जी रही हूं और अपनी दोनों पुत्रियों को भावी जीवन के लिए तैयार कर पा रही हूं। यह सब डॉ. के.एल. कोठारी सा. के आशीर्वाद से ही हुआ है और हो रहा है। अस्तु, आपका आभार प्रकट करने के लिए स्वयं के पास शब्दों का नितान्त अभाव अनुभव कर रही हूं। ...

कुंदन तो कुंदन है !

कैलाश विहारी वाजपेयी
राजस्थान प्रशासनिक सेवा अधिकारी (से.नि.)

कुंदन का अर्थ स्वर्ण होता है। स्वर्ण के कई गुण हैं। भारतीय संस्कृति में स्वर्ण–उसकी सुंदरता, उसकी चमक, उसकी बहुमूल्यता तथा उसकी पवित्रता के लिए जाना जाता है। भारतीय जनमानस में ईमानदारी व निष्ठा की उपमा खरे सोने के रूप में दी जाती है। भाई कुंदन कोठारी का जीवन भी निरंतर कर्मठता, संघर्षरतता एवं नित–नूतन कीर्तिमान स्थापित करने का रहा है। उनके प्रथम सान्निध्य की कल्पना करता हूं तो एक सज्जन, सरल, परंतु सदैव सक्रिय छात्र की तस्वीर उभरती है। मैंने महाराणाा भूपाल कॉलेज में 1951 में इन्टर साइन्स में प्रवेश लिया था और वे बाद में प्रविष्ट हुए। हास–परिहास के लहजे में वे बताते हैं कि हम दोनों ने नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के जनरल सेक्रेट्री का चुनाव लड़ा था और उनके कथनानुसार छात्राओं के वोट मुझे ज्यादा मिले और मैं जीत गया । कौन जीता, कौन हारा, यह कतई महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि उस घटना को एक मधुर संस्मरण के रूप में याद रख कर वे ही जीत गये । मेरे बीएस.सी. के एक साथी ललित शाह भाई कुंदन के भी मित्र थे, पर कुंदन के आकर्षण ने ललित शाह को उनका अधिक घनिष्ठ बनाया। कुंदन की धर्मपत्नी श्रीमती विमला कोठारी भी अत्यंत मधुर एवं व्यवहार कुशल हैं। ललित के विवाह के बाद दोनों की और घनिष्ठता में विमला जी का योगदान रहा।

कुंदन की अकादमिक प्रतिभा एवं क्षमता सदैव अद्वितीय रही। बीकानेर कृषि विश्वविद्यालय में डीन पद तक की यात्रा निश्चय ही इसका प्रमाण है। केवल यही नहीं, वे अनेक संस्थाओं एवं प्रायोजनाओं से जुड़े रहे एवं उत्कृष्ट कार्य किया। शोध कार्यों में उनका योगदान सदा उत्कृष्ट कोटि का आंका जाएगा। हम दोनों जीवन के दो अलग–अलग मार्गों पर चले। वे विज्ञान पथ पर चलते रहे और मैं कला पथ का यात्री बना। अंग्रेजी में एम.ए. करके जब शिक्षा विभाग में आ गया व संस्था प्रधान बना तो भाई कुंदन एवं विमला जी से पुनः मिलन हो गया। श्रीमती विमला कोठारी महिला मंडल में प्रिन्सिपल थीं और मैं वहां एक वर्ष तक अंग्रेजी का अंशकालीन अध्यापन करता रहा था। विमला जी को मैंने अत्यन्त व्यवहार कुशल, मधुर, विनीत, शिष्ट परन्तु सफल प्रशासक पाया । निश्चय ही विमला जी के इन गुणों ने भाई कुंदन के व्यक्तित्व में सोने में सुहागा का कार्य किया । संस्था प्रधान बना और बाद में आर.ए.एस. में चला गया तो भाई कुंदन का फिकुसा इंटरप्राइजेज तथा फिकुसा कम्प्यूटर्स के मालिक के रूप में संबंध बना रहा। अपने प्रतिष्ठान के रथ को ऐसे चलाया कि उनकी सभी संतानें सुयोग्य, सुशील बनीं और कोठारी दम्पत्ति का मान बढ़ाया।

भाई कुंदन जी के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है लोगों को जोड़ने की। जोड़ने की इस प्रवृत्ति से उन्होंने अपनाी जीवन सार्थक कर लिया। विज्ञान समिति का सुंदर एवं विशाल भवन तथा उनकी बहुमुखी प्रवृत्तियाँ उनके व्यक्तित्व का स्तुति गान करती हैं। जब तक यह संस्था रहेगी भाई कुंदन जी का नाम अमर रहेगा। इस संस्था के माध्यम से भाई कुंदन अनेक दूसरी संस्थाओं को तन, मन, धन से सहायता कर रहे हैं। कोई चिकित्सा शिविर करता है, कोई स्नेह भोज तो कोई ज्ञान प्राप्ति एवं सत्संग के कार्यक्रम करता है। इस सबका पुण्य डॉ. कुंदन कोठारी के खाते में जाएगा ही। आज वे सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक गतिविधियों के सूत्रधार हैं। हाल ही में डॉ. कुंदन कोठारी का एक नया रूप देखा। उनमें जो भावनाएं हैं, जो संवेदनाएं हैं, जो तड़प है, जो लगाव है, वह कविता के रूप में प्रवाहित होने लगा है। धीरे–धीरे उसका रूप भी बहुत प्रभावी व परिष्कृत हुआ है। भाई कुंदन जी के प्रति मेरे मन में स्नेह, उम्र में बड़े हैं अतः आदर भी। वे सदैव स्वस्थ रहें, सपरिवार सुखी व सम्पन्न रहें तथा सामजिक सरोकारों के नितनूतन कीर्तिमान स्थापित करते रहें, यही ईश्वर से विनय है।

Dr. B L Agrawal

Ex. Professor of Statistics

I heartily congratulate you on your 81st birthday and wish longevity, prosperity and happiness forever. He is a very polite and adjustable person. Sometimes he is more cool than required. Dr. Kothari is an applied and social scientist. As I judge, his first priority is Vigyan Samiti than anything else. It will not be wrong to say that he devoted himself fully in the services and development of Vigyan Samiti. He has created a team of devoted and sincere scientist which took its activities to high standards. I wish him all success in his mission for all times to come.

कुशल नेतृत्व के धनी

राजेन्द्र कुमार चतुर
मुख्य अभियन्ता (से.नि.)
जल संसाधन विभाग

रजत की तरह स्वच्छ सफेद बालों वाला चमकता चेहरा, सौम्य भाव एवं निर्भीक व्यक्तित्व के कुन्दनलाल जी कोठारी सा. जिससे भी बात करते हैं, उसे उनकी प्रतिभा, उत्तम शैली एवं उच्च आचरण का अहसास होता है एवं ऐसा मनोभाव होता है कि उनसे सदैव मिला जाए। उच्च शिक्षित, व्यवहार कुशल एवं नेतृत्व के धनी कोठारी सा. ने पिछले 55 वर्षों से अधिक समय में सदैव विज्ञान समिति के कार्यों को बहत अच्छी तरह संपादित किया एवं विज्ञान समिति को देश की अग्रणी स्वैच्छिक स्वयंसेवी संस्था बनाया। कोठारी सा. का विज्ञान समिति में ही नहीं वरन् महावीर इंटरनेशनल, रोटरी क्लब, तेरापंथी जैन समाज एवं कई शिक्षण संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान हैं।

मैंने विज्ञान समिति, महावीर इंटरनेशनल एवं जैन समाज में आपके साथ काम कर एक सुखद अनुभव प्राप्त किया है। मेरे महावीर इंटरनेशनल के उदयपुर केंद्र के अध्यक्षीय कार्यकाल में प्रारम्भ की गई छात्रवृत्ति योजना के आप संयोजक रहे एवं पिछले आठ वर्षों से निरन्तर इसके संयोजक हैं। यह छात्रवृत्ति योजना आज एक वृहद रूप धारण कर चुकी है एवं इसके द्वारा स्कूलों व कॉलेजों के जरूरतमंद सैंकड़ों विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। आपने संयोजक का दायित्व जिस तरह निभाया वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

डॉ. कुन्दनलाल जी कोठारी सा. शतायु होवें जिससे समाज को उनकी अनवरत स्वैच्छिक सेवा भावना का लाभ निरन्तर मिलता रहे। मैं आपका व आपके परिवार का सम्मान करते हुए उनके सुखद भविष्य की कामना करता हूं।

डॉ. के.एल. कोठारी : कवि हृदय एवं वैज्ञानिक

प्रोफेसर प्रेमसुमन जैन
पूर्व डीन, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रोफेसर डॉ. के.एल. कोठारी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कृषि वैज्ञानिक हैं। उन्होंने अपने अनुसंधान एवं शैक्षणिक योगदान से कृषि विज्ञान को नवीन दृष्टि प्रदान की है। उनका लक्ष्य रहा है कि वैज्ञानिक उपलब्धियां जन–जन तक पहुंचें। इस कारण डॉ. कोठारी समाज के हर वर्ग से जुड़े रहे हैं और प्रत्येक क्षेत्र के विशेषज्ञों को समाज से जोड़ने में सक्रिय रहे हैं। उसका सुपरिणाम है डॉ. कोठारी द्वारा स्थापित एवं कुशलता से संचालित उदयपुर की वैज्ञानिक पहचान **'विज्ञान समिति'**। 'विज्ञान समिति' जितना छोटा नाम है, उतना ही उसके सेवा कार्यों का दायरा बड़ा है। विज्ञान, लोकशिक्षण, स्वास्थ्य, महिला–उत्थान, दर्शन और साहित्य के अनेक विशेषज्ञ इसके साथ जुड़े हुए हैं। उन सबको निस्वार्थ भाव से जोड़े रखना डॉ. कोठारी के समन्वयात्मक व्यक्तित्व का उज्ज्वल पक्ष है।

डॉ. कोठारी इतने बड़े वैज्ञानिक और चिंतक होते हुए भी हृदय से सरल और धार्मिक व्यक्ति हैं। उनके साथ यात्रा करने का, चर्चा करने का, साथ बैठने का जितना सुयोग मिला उससे यह जाना कि जीवन में सीखना और सिखाना कभी समाप्त नहीं होता । यही कारण है कि डॉ. कोठारी जैनधर्म एवं दर्शन पर उतनी ही गहराई से चर्चा करते हैं, जितनी गहनता से किसी वैज्ञानिक समस्या पर। उन्होंने अपनी भावनाओं को कविताओं के माध्यम से भी व्यक्त करना पसन्द किया है। उनकी कविताएं हृदय को छूने वाली और सहज होती हैं। ऐसे कवि हृदय वैज्ञानिक डॉ. कोठारी शतायु हों तथा उनके समाज सेवा के कार्य फूलें–फलें, प्रेरणात्मक बनें, यही हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

सेवा भावना के सम्प्रेरक

डॉ. आई.एल. जैन
वरिष्ठ फिजिशियन
संत तरेसा हॉस्पिटल, उदयपुर

मन की तीन अवस्थाएं होती है–जागृत, स्वप्न और सुषुप्त। कोठारी सा. के सुषुप्त मन में स्वप्न देखा और उसे जागृत किया विज्ञान समिति के रूप में। श्री कुन्दन जी कोठारी ने 55–56 साल पहले विज्ञान में जागृति पैदा करने के लिए इस विज्ञान समिति की स्थापना की थी जो अब एक वटवृक्ष का रूप ले रही है। मैं करीब 35–40 वर्ष बाद वापस उदयपुर आया तो मुझे लगा कि मैं अनजान से शहर में आ गया हूं। ऐसे में मेरे प्रिय मित्र श्री राजेन्द्र चतुर ने जो उस समय कार्यवाहक अध्यक्ष थे ने कहा कि एक बार विज्ञान समिति आकर देखूं। यहां आकर कोठारी साहब से परिचय कराया और न जाने ऐसा क्या हुआ कि मैं 10–15 मिनिट में ही विज्ञान समिति का संरक्षक सदस्य बन गया। अब तो उदयपुर में होने पर हॉस्पिटल से छूटते ही गाड़ी विज्ञान समिति की ओर मुड़ जाती है। यहां आकर मानसिक , शारीरिक, आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के साथ जो खुराक मिलती है जो तन व मन को ताजगी प्रदान करती है। इस तरह मेरा मन सुषुप्त अवस्था में था उसे विज्ञान समिति ने जागृत कर दिया, जिसका श्रेय श्री कोठारी जी को जाता है। यह सब हुआ यहां के सदस्यों को आपस में सौहार्द भाव तथा श्री कोठारी साहब का महान् व्यक्तित्व, कर्मनिष्ठता, सरलता, सहयोग, हर सदस्य के प्रति सम्मान् व आत्मीयता ऐसे गुण हैं जो मुझे वर्षों तक मेरा मार्गदर्शन करते रहेंगे। आपकी सभी धर्मों के प्रति आस्था, धार्मिक व वषिष्ट सिद्ध पुरूष के व्यक्तित्व की छाप हम सब को जोड़े रखती है।

कोठारी साहब की स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को देखते हुए मैंने उनको निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाने की बात कही। 2–3 माह के विचार विमर्श पश्चात् जुलाई 2013 से हर माह के तीसरे रविवार को शुरू में वरिष्ठजनों के लिए संपूर्ण स्वास्थ्य जाँच एवं परामर्श शिविर शुरू हुआ । इसमें वरिष्ठजनों के स्वास्थ्य की दृष्टि से हर विशेषज्ञ की सेवाएं प्रदान की जाती है। इसमें रक्तचाप, मधुमेह, युरीन, माइक्रो अल्बूमिन, न्यूरोपेथी, बोडी फेट विश्लेषण व अगले माह से हीमोग्लोबीन की जांच भी निःशुल्क की जावेगी। इस कैम्प में जरूरतमंदों को निशुल्क दवाइयां भी प्रदान की जाती है। इस कैम्प मे मूलतः ऐलोपेथी के साथ आयुर्वेदिक, होम्योपैथी, एक्यूप्रेशर, फिजियोथेरेपी, डेंटन केयर के साथ पिछले एक साल से हर आयु वर्ग को निःशुल्क परामर्श दिया जाता है व हर विशेषज्ञ की सेवाएं दी जाती हैं। इसमें कोठारी सा. के साथ हमारे कार्यकारी अध्यक्ष श्री लक्ष्मीलाल जी धाकड़ का भी उल्लेख करूंगा, उनकी सेवाभावी सोच में गुणात्मक सेवाएं देना ही मूल ध्येय होता है।

आपकी सादगी, सरलता व मृदुल व्यवहार हमें काम करने के लिए प्रेरित करता रहता है। हम आपके अच्छे स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

Rishi Vaigyanik : Dr. Kothari

Surendra Singh Pokharna

Scientist (Ret.) ISRO

Happy 81st birthday to Prof. Kundan Lal Kothari
aur Ghani Ghani khamma.

I wish Professor Kundan Lalji Kothari happy 80th (100-20) birth day on June 30, 2015. He is a very great man with a great vision. It is this vision which had resulted into laying a foundation of Vigyan Samiti 56 years ago. Our beloved Mewar which is better known for bravery and patriotism has been equally great in the field of Science and Technology. Prof. Kothari has established this fact by taking a great step in establishing Vigyan Samiti, when the so called modern science was not much heard of in Mewar.

This institution is now well known for its activities in widely different fields, being carried out mostly by retired scientists, engineers and academicians. It is not an easy job to work together with so many intellectuals from different fields and who are above 60. To make them so productive without any material benefit is made possible by Prof. Kothari's simplicity, love and respect and wide experience in different fields along with a quality of giving credit to people wherever they deserves. He is a Rishi Vaigyanik because he has two qualities put together. It is his work for social cause and love for Mewar which has kept him so young and energetic.

Although I knew him from as early as 1984-85, when I used to take classes in RCA, but we did not interact. It is quite lately that we started coming closer to each other. It was my hard luck that we met so late. I have missed many things from him. I wish him to lead us for many more years. I wish him many more years of active healthy and happy life both with his family and Vigyan Samiti family.

दर्शन विज्ञान प्रकोष्ठ के प्रेरणा स्रोत डॉ. के.एल. कोठारी

डॉ. एन.एल. कच्छारा

प्राचार्य (से.नि.)

मोतीलाल नेहरू रिजनल इंजीनियरिंग कॉलेज, इलाहाबाद

डॉ. के.एल. कोठारी से मेरा प्रथम संपर्क 2007 में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के उदयपुर चातुर्मास में हुआ। सेवाकाल में मैं उदयपुर से बाहर ही रहा, नगर में मेरा सम्पर्क नगण्य था। आचार्य श्री कनकनंदी की प्रेरणा से वर्ष 2007 में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी व मुनि श्री महेन्द्रकुमार जी के सान्निध्य में जैन दर्शन और विज्ञान विषय पर एक संगोष्ठी की योजना बनी। इस संदर्भ में मुझे डॉ. के.एल. कोठारी से मिलने का निर्देश हुआ। इसके बाद तो हम दोनों ने मिल का चातुर्मास व्यवस्था समिति सहायता से संगोष्ठी का सफल आयोजन किया । संगोष्ठी के अंतिम सत्र में जैन दर्शन और विज्ञान विषय पर निरंतर गतिविधि चालू रखने का निर्णय लिया गया। मैंने कोठारी साहब से निवेदन किया कि इस कार्य के लिए विज्ञान समिति बहुत उपयुक्त स्थान है। कोठारी साहब ने तुरन्त स्वीकृति प्रदान की और समिति में जैन दर्शन और विज्ञान प्रकोष्ठ की स्थापना कर दी गई।

इस प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ चलाने में डॉ. कोठारी का बहुत बड़ा हाथ है। समिति की सुविधाएं उपलब्ध कराने के अतिरिक्त वे हमेशा सहायता को तत्पर रहते हैं तथा नियमित रूप से इसकी बैठकों में भाग भी लेते हैं। आपका यह एक विशेष गुण है कि आप संयोजक को निर्णय लेने की स्वतंत्रता में विश्वास रखते हैं और हर संभव सहयोग प्रदान करते हैं। आपके उत्साह और रुचि के कारण ही प्रकोष्ठ उदयपुर के बाहर भी कई संगोष्ठियाँ आयोजित करने में सफल रहा।

विज्ञान समिति एक विलक्षण संस्था है। नगर के और बाहर के प्रतिष्ठित विद्वान एक साथ काम करते हैं तो कहीं न कहीं उनका अहम् टकराता है जो संस्था के कार्य में बाधा बनता है। परन्तु विज्ञान समिति में ऐसी स्थिति देखने को नहीं मिलती। इसका श्रेय डॉ. कोठारी को जाता है। किसी भी कार्य की सफलता का श्रेय स्वयं नहीं लेकर वे सम्मानपूर्वक अन्य सदस्यों को दे देते हैं। इनकी इसी निष्काम भावना तथा समर्पण और लगन ने विज्ञान समिति में प्राणों का संचार किया है और समिति को वर्तमान ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। आपसे प्रेरणा पाकर सौहार्द और समन्वय के वातावरण में सभी सदस्य सहर्ष अपना समय दान कर रहे हैं। विज्ञान समिति का ग्राफ बराबर ऊपर जा रहा है और नई–नई गतिविधियाँ इसके कार्यक्रमों में जुड़ती जा रही हैं।

हम सब सदस्य यही कामना करते हैं कि डॉ. कोठारी के कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में विज्ञान समिति निरंतर समाज सेवा में अग्रणी रहे और इसके सदस्यों की विशेष योग्यता का लाभ स्थानीय और आस–पास के समाज को मिलता रहे।

पुराने रिश्तों की मधुर यादें

रमेश चंद्र भटनागर
Ex Sr. Vice President
Wolkem India Ltd.

मेरा परिचय डॉ. के.एल. कोठारी (कुन्दन दादा) से सन् 1955 में हुआ जब मैं सिर्फ 12 वर्ष का था और उदयपुर में मिडिल बोर्ड की परीक्षा देने सलुम्बर से अपने गणेश घाटी स्थित मकान पर आया। आप मेरे बड़े भाई डॉ. एम.के. भटनागर के साथ बी.एससी. में अध्ययनरत थे और पास में ही एक कमरा किराये लेकर पढ़ाई करते थे।

चूंकि मैं बहुत छोटा था। कुन्दन दादा मुझे 7 बजे माडर्न मिडिल स्कूल स्वरूप सागर परीक्षा स्थल पर साईकिल पर बैठा कर छोड़ते थे और फतहसागर स्नान एवं तैरने चले जाते । लौटते वक्त फिर से लेकर घर लौटते थे। उसी समय से दादा हमारे घर के सदस्य समान बन गये जो रिश्ता आज तक बरकरार है। कुन्दन दादा की उस वक्त की छवि मुझे आज भी उसी तरह याद है जैसे कल की बात हो।

एक छोटे गांव से उदयपुर आकर आपने न सिर्फ संघर्ष किया बल्कि शहर के सामाजित एवं प्रशासनिक पटल पर अपना वर्चस्व बनाया एवं शहर के गिने चुने शालीन एवं भद्र लोगों में आपकी गिनती की जाती है। आपकी बोया छोटा बीज आज विशाल वट वृक्ष विज्ञान समिति के रूप में फल फूल रहा। कुन्दन दादा के साधु स्वभाव में लोगों को अपने ओर खिंचे जाने की अद्भूत प्रतिभा है। यही कारण है कि आज विज्ञान समिति ही नहीं वरन कई दूसरी सामाजिक सेवा संस्थाओं में आपके योगदान की सराहना की जाती है।

मैं कुन्दन दादा के स्वास्थ्य एवं लम्बी आयु की ईश्वर से प्रार्थना करता हूं ताकि उनकी स्वार्थ रहित सेवाओं का शहर को लाभ मिलता रहे। ...

दोस्तों का दोस्त – भाई डॉ. कुन्दन कोठारी

डॉ. के.बी. शर्मा

संयुक्त निदेशक (से.नि.)
पशुपालन विभाग, राजस्थान

दिनांक 30.06.2015 को मेरे अभिन्न मित्र श्री कुन्दनलाल कोठारी के, जीवन के 80 वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई। 30 जून 1935 को मेवाड़ के केलवा ग्राम में जन्मे फक्कड़ किस्म के आत्मविश्वास से परिपूर्ण, धुन के पक्के, दूर की सोच रखने वाले स्वप्नदृष्टा–मित्र से मेरी पहचान 1952 में महाराणा भूपाल कॉलेज में तब हुई जब हमने इन्टरमीडीएट में विज्ञान संकाय में प्रवेश लिया। हमने 1954 तक साथ साथ पढ़ाई भी की और एक दूसरे को जाना समझा। बाद में कुन्दन भाई तो बी.एससी. के बाद जोधपुर एम. एससी. करने चले गए और मैं बीकानेर चला गया।

1958 में कुन्दन की नौकरी कृषि विभाग में प्लान्ट पैथोलोजी में लगी और मेरी 1959 में पशु चिकित्सालय में। उसी समय कुन्दन ने एक सपना देखा – विज्ञान का प्रचार प्रसार एवं लोकप्रियकरण के क्षेत्र में कार्य करने का। इस बिन्दु पर चर्चाएं हुई, और हमारी मित्र मण्डली का समर्थन मिला। मित्रों में डॉ. बी. भण्डारी, डॉ. एम.के. भटनागर, मैं और डॉ. कुन्दन कोठारी थे। इस प्रकार विज्ञान समिति का प्रादुर्भाव हुआ। कालान्तर में स्व. श्रीमान एम. एल. मेहता सा. एवं हुकुमराज जी जैसे गणमान्य महानुभावों का सम्बल मिलता गया। शीघ्र ही विज्ञान समिति का पंजीयन हुआ और 28 अगस्त 1959 को स्थापना की गई। इस संस्था की प्रमुख गतिविधि लोक विज्ञान का मासिक प्रकाशन था।

इस पुनीत कार्य को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया का आशीर्वाद मिला और श्री गिरधारीलाल जी शर्मा के सहयोग से संस्था के लिए अशोक नगर में 20,000 वर्ग फीट भूमि का आंवटन हुआ।

जीवन में स्वतः कई उतार–चढ़ाव आते हैं। कुन्दन जी के जीवन में ऐसा अवसर आया जब वे विश्वविद्यालय में कार्यरत थे, कुलपति ने उनका स्थानान्तरण उनके चयन पद की जगह से अन्यत्र कर दिया। इसका कुन्दन जी ने नियमानुसार विरोध किया और अपनी उचित बात पर अड़े रहे। अन्ततोगत्वा कुलपति ने उनकी सेवाएं समाप्त कर सेवा मुक्त कर दिया। कुन्दन जी ने हिम्मत से काम लिया और ठान लिया कि कुछ भी हो अन्याय तो मान्य नहीं होगा। आर्थिक कठिनाई आना

निश्चित था। व्यवसाय किया जिसकी परिणति अब सुपुत्र श्री पवन के द्वारा व्यवसाय को HINT प्रतिष्ठान के रूप में स्थापित किया गया है। धैर्य है सात वर्ष के संघर्ष के बाद ''स्टेट लेवल कमेटी'' ने इस प्रकरण पर डॉ. कुन्दन के हक में निर्णय दिया और पूर्ण वित्तीय परिलाभ नियमानुसार डॉ. कुन्दन को मिले। पुनः सेवा में उसी पद पर स्थापित किया। धन्य है ऐसी हिम्मत वाले व आत्मविश्वासी डॉ. कुन्दन को।

मेवाड़ के स्वाभिमान की मर्यादा को अक्षुण्ण रखने वाले डॉ. कुन्दन जी को शत् शत् नमन। ईश्वर उनकी इस हिम्मत व स्वाभिमान को आजीवन बनाए रखे।

दूर की सोच रखने वाले और धुन के पक्के मेरे दोस्त भाई डॉ. कुन्दन कोठारी को जो सोच को आज 55 वर्ष बाद राष्ट्रीय पटल पर पहचान बना चुकी विज्ञान समिति – उदयपुर शहर व देश को सुविख्यात् स्वयंसेवी संस्थान के रूप में बड़ी देन है। आज डॉ. कुन्दन कोठारी के जीवन की हीरक जयन्ती के सुअवसर पर उनके स्वप्न पुष्प की स्वर्ण जयन्ती एक सुखद संयोग है। मैं डॉ. कुन्दन जी कोठारी को भावी सुखमय जीवन हेतु मंगलकामनाए प्रस्तुत करता हूँ।

कुन्दन होना बाकी है

जब भी, जहां भी जुड़े, पूर्णतः जुड़े,
अपनी बात में हो दम तो सदा ही अड़े।
पर हित का मुद्दा, चाहे जो भी हो,
तदर्थ पूरी ताकत से लड़े ।।
राजनीति से परे रहका,
सबको सदा साथ लिया।
नवाचारों को प्रोत्साहन दे
सोच को नया आयाम दिया।।
चाहे इन्द्रियाँ शिथिल हुई,
चाहे कुन्तल धवल हुए।

अपने छलकते उत्साह के दम पर
'सोलहवें सावन' से नवल हुए।।
'कुन्दन' कहते, काम बहुत बाकी हैं,
यह जीवन तो एक झाँकी है।
आँखों में पलते सपने बहुत हैं
उन्हें, अंजाम तक पहुंचाना अभी बाकी है।।
अभी तो 'स्वर्ण' बने हैं आप,
विज्ञान समिति की लता को
सींच कर, बढ़ाना है, कसौटी पर तपा कर
'कुंदन' होना बाकी है।।

डॉ. (श्रीमती) हंसा हिंगड़
पुस्तकालयाध्यक्ष, भू–विज्ञान विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

स्वयं सेवी भावना के पुरोधा

रोशनलाल कुणावत
अधिष्ठाता (से.नि.) विधि महाविद्यालय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

डॉ. कोठारी आरंभ से ही समाज सेवी, चिंतक और विचारक रहे हैं। उन्होंने 60 के दशक में ही विज्ञान–समिति जैसी संस्था की स्थापना की और विज्ञान व तकनीकी के प्रचार–प्रसार में लग गये। डॉ. कोठारी कई वर्षों तक तेरापंथ समाज के अध्यक्ष रहे और समाज में रूढ़ियां कम करने और धर्म के साथ–साथ वैज्ञानिक विचारों को भी उन्होंने प्रचार–प्रसार किया। धर्मसंघ में इन्हीं के कार्यकाल में अनेक वैज्ञानिक प्रवचन हुए। समाज में बिखराव न हो और सब को साथ लेकर चलने का सदैव प्रयास करते ।

इसी प्रकार डॉ. कोठारी महावीर इंटरनेशनलके अध्यक्ष पद पर चुने गये व दो सालों तक इस पद पर कार्य करते हुए उन्होंने स्थानीय शाखा को काफी ऊँचाई तक पहुंचाया जिससे संस्था को कई पुरस्कार भी मिले। इन सब सामाजिक और बौद्धिक कार्यों को करते सन् 1983 में डॉ. कोठारी समान विचारों वाले साथियों से विचार विमर्श करके "कमल क्लब" की स्थापना की ।आरंभ में लगभग 20 सदस्य थे। सदस्यों के घरों पर ही बैठकें होती। पति–पत्नी दोनों ही इन बैठकों में भाग लेते। अपने सुख–दुःख, व्यापार, नौकरी की चर्चा करते और एक दूसरे की संकट के समय सहायता करना व नैतिक व अन्य समर्थन देना हो गया। सदस्यों व उनके सदस्यों के परिवारों के मध्य संबंध प्रगाढ़ बने। इन बैठकों के बाद जलपान अथवा भोजन की व्यवस्था होती । इन मासिक बैठकों में सदस्यों की लगभग शत प्रतिशत उपस्थिति रहती। इन बैठकों में कई अच्छे विद्वान वक्ताओं के व्याख्यान रखे जाते ।

इस संस्था के सदस्य तेरापंथ संघ के भी कई आयोजनों, महावीर जन्मोत्सव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। आज भी यह संस्था उतनी ही सक्रिय है । यह सब हुआ डॉ. कोठारी के नेतृत्व, मृदुभाषी व संगठनिक अनुभव के कारण। उनका मातृभाव और सदैव दूसरों की सहायता करने की प्रबल इच्छा के कारण संभव हुआ। अस्सी वर्ष के डॉ. कोठारी आज भी सक्रिय हैं और उनके मन में सदैव सभी संस्थाओं को ऊंचाइयों की ओर ले जाने का भाव रहता है। अभिनन्दन के अवसर पर मेरी खूब खूब शुभकामनाएं। वे दीर्घायु हों, स्वस्थ रहे। उनके चेहरे की मुस्कराहट, वाणी का माधुर्य सदैव बना रहे। ...

स्नेह के सागर : डॉ. कोठारी सा.

कैलाश वैष्णव
सहायक कार्यालय प्रभारी
विज्ञान समिति

धरती पर कुछ लोग भगवान सा स्वभाव लेकर आते हैं, प्रभु सी कृपा, दया एवं स्नेह वर्षा। श्री कोठारी सा. ऐसे ही इन्सान है जिनके साथ रहने मात्र से लोहा भी सोना बन जाता है। मैं सत्रह वर्षों से विज्ञान समिति में कार्यरत हूं। मैंने 1998 में मशरुम उत्पादन का कार्य प्रारंभ किया, तब मैं कोठारी सा. के सम्पर्क में आया । आपने पूर्ण जानकारी दी और सहयोग के लिए कहा। मेरा आपसे पहला परिचय ही प्रेमपूर्वक रहा।

विज्ञान समिति में कार्य करते हुए मशरुम व वर्मी कम्पोस्ट जैसे नवीन कृषि कार्यों के प्रचार–प्रसार में मुझे डॉ. कोठारी सा. के साथ रहने का अवसर मिला। उनका शान्त चित्त, मधुर वाणी, सबको सम्मान देना आदि गुणों से मैं बहुत प्रभावित हूं। अनेक बार मुझ से काम में गलती हो जाती है किन्तु आपकी सहनशीलता व मेरी मजबूरी को समझने की कला से हमारा सम्बन्ध निरन्तर मजबूत हुआ।

डॉ. कोठारी स्नेह के सागर हैं। सबसे पारिवारिक रिश्ता रखते हैं। मेरे बच्चों की शिक्षा–दीक्षा में आपका बहुत ही सुन्दर मार्गदर्शन व सहयोग मिला। आपने मेरी हर मुसीबत में सहायता कर सच्चे इंसान होने का परिचय दिया।

डॉ. कोठारी सा. ने महिलाओं की उन्नति के लिए खूब काम किया। उन्हें पढ़ाई की प्रेरणा दी। घूंघट छोड़ने व आत्मविश्वास बढ़ाने की शिक्षा दी। 'जीवन पच्चीसी' जैसी जड़ी–बूंटी गांव वालों के लिए संजीवनी है। गांवों में समूह निर्माण एवं प्रशिक्षण करवाना हो या कृषकों का भ्रमण कार्यक्रम, महिला शिविर हो, विज्ञान समिति का कोई भी समारोह–मैंने कोठारी सा. की प्रेरणा से हर कार्य को बढ़िया से बढ़िया करने की कोशिश की । आपका व्यक्तित्व एक वृक्ष के समान है जो छाया व फल दोनों देता है। मैं धन्य हूं जो मुझे डॉ. कोठारी की छत्र छाया में रहने का अवसर मिला। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह आशीर्वाद अनन्त व अटूट बना रहे। ...

विज्ञान समिति के कर्णधार डॉ. के.एल. कोठारी

व्यक्तित्व :

हंसमुख चेहरा, मधुर वाणी
कुशाग्र बुद्धि, दृढ़ निश्चयी
फुर्तीली काया, शिष्ट व्यवहार
सादा जीवन, उच्च विचार
संयम, सहिष्णुता, अनुशासन की दुर्लभ मिसाल
यह परिचय है उनका, जिनका नाम है कुन्दनलाल
कर्मनिष्ठ शिक्षक, ईमानदार अधिकारी
सजग नेक इंसान, अध्यात्म अनुरागी
धुन के पक्के, विनम्र, विवेकी,
सुने सबकी करे मन की
विष्वसनीय मित्र, आदर्ष नागरिक
स्नेहिल हृदय, सोच वैज्ञानिक
उदारमना, प्रेरणा पुंज, सद्गुणों के भण्डारी
यह व्यक्तित्व है उनका जिनको कहते हम के.एल. कोठारी

परिचय :

30 जून 1935 के शुभदिन केलवा ग्राम में जन्म हुआ
बचपन से मेधावी, रचनाशील मानो रोड़ी में रत्न हुआ
माता कज्जू बाई से पाये करुणा और सेवा के संस्कार
पिता शेषमल जी से पायी दूरदर्शिता और कविता का संसार
सुशिक्षित विमला जी से हुआ परिणय बंधन
शांत, सरस, छप्पन वर्षो का दाम्पत्य जीवन
पवन और पराग दो पुत्र रत्न, पाकर खुशियां मिली
रेणु और लीना मानो, आंगन में दो कलियां खिली
जननी जन्मभूमि के प्रति, रहते जो सदा आभारी
यह कहानी है उस जीवन की, जो जाना जाता है कुन्दनलाल कोठारी

शिक्षा व कर्म क्षेत्र :

सन् 1958 में वनस्पतिशास्त्र के बने अधिस्नातक
दस वर्ष बाद बने प्लांट पैथोलोजी के डॉक्टर
प्रथम नियुक्ति षोध सहायक से बढ़ते रहे चरण
प्रोफेसर व डीन बने, हर हाल में शुद्ध रखा आचरण
हुआ विश्वविद्यालय से एक बड़ा सैद्धान्तिक संघर्ष
सत्य को विजय मिली पाया जीवन में उत्कर्ष
सन् 1994 में पायी सेवा निवृति, बढ़ी विज्ञान समिति की जिम्मेदारी
यह केरियर है उस मनीषी का, जो कहलाता है प्रो. के.एल. कोठारी

सामाजिक जीवन :

अनन्य श्रद्धाभाव है गुरु और तेरापंथ के लिए
तभी तो समाज के अध्यक्ष रहे 11 वर्ष के लिए
सन् 1960 में तेरापंथ का द्विशताब्दी समारोह मना
कार्य कुशलता परख आपको ही सचिव चुना
महावीर इन्टरनेशनल और रेडक्रॉस सेवा के मंच
रक्तदान अभियान के प्रणेता, अनेक संस्थाओं के स्तम्भ
इनकी मित्रता रूपी वृक्ष की जड़ें बहुत ही गहरी
के.बी. शर्मा, एम.के. भटनागर, बी.भण्डारी की जोड़ी
प्रेम और सेवा में लीन, सक्रियता से सींचे जीवन क्यारी
यह गाथा है उस विभूति की जिसे कहते हम के.एल. कोठारी

विज्ञान समिति :

विज्ञान समिति के संस्थापक, अभिभावक, संचालक
संस्था की धुरी बन किये खूब काम, किए कायम कई मानक
सीमित साधन, असीमित आत्मबल बना संसाधन
किया लोकविज्ञान का अविरल 21 वर्षों तक प्रकाशन
मशरूम उत्पादन, वर्मीकल्चर, इडारा से पहचान बनी
अनेक प्रशिक्षण सेमीनार हुए, पर्यावरण संरक्षण से शान सजी
ग्राम्य चेतना, महिला सशक्तीकरण के आयाम बड़े
अनेक उत्सव, दिवस मनाएं, सर्वसमाज के लोग जुड़े

समिति के भौतिक विकास का सपना साकार किया
सबके आग्रह पर पहली बार अध्यक्ष पद स्वीकार किया
स्वयं सेवी भावना से प्रेरित, पारदर्शिता जिसकी भारी
उस विज्ञान समिति के कर्णधार को, हम कहते हैं डाक्टर कोठारी
समिति, समाज व परिवार, जो सर्वत्र प्रिय और सम्मानित
बेटों-बहुओं, परिजन, मित्रों सबके साथी सबके स्नेहिल
सादर अभिनन्दन तुम्हारा, करें शुभकामनाओं का वर्षण
स्वस्थ रहें, दीर्घायु हो, सदैव करें हमारा दिशा निर्देशन

डॉ. एन.एल. गुप्ता एवं प्रकाश तातेड़

प्रसंग –डॉ. के.एल. कोठारी के 79 वें जन्मदिवस 30 जून 2013 पर प्रस्तुत

दूरदर्शी व्यक्तित्व : डॉ. के.एल. कोठारी

लक्ष्मण सिंह कर्णावट
प्रबंध निदेशक
होटल विष्णु प्रिया, उदयपुर

वर्तमान में भौतिकता की चकाचौंध, आर्थिक संपन्नता की अंधी दौड, आण्डम्बर एवं पाश्चात्य संस्कृति के विवेकहीन बढ़ते प्रभाव के फलस्वरूप भारतीय संस्कृति पर कुसंस्कारों का कोहरा छाया हुआ है। व्यक्तिवाद इतना हावी हो गया है कि परिवार–हित की बात या परिवार के प्रति अपने दायित्व की बात लोग भूलते जा रहे है। ऐसे वातावरण के मध्य व्यक्तिवाद एवं परिवारवाद से उपर उठकर समाज–हित को गले लगाने वाले बिरले लोग ही उपलब्ध होते है, उन्ही बिरले लोगो की गिनती में एक नाम आता है डॉ. के.एल. कोठारी साहब का। आज के 55 वर्ष पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ का द्विशताब्दी समारोह कोठारी साहब की जन्म भूमि केलवा में आषाढ शुक्ला पूर्णिमा संवत् 2017 को आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में मनाया गया। मुख्य अतिथि थे सर्वोच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश माननीय श्री वी.पी. सिन्हा। योजना बनी कि उपरोक्त समारोह स्थानीय रावले के सामने जो बडा ग्राउण्ड है जिसे रामचौक के नाम से जाना जाता है वहां सम्पन्न किया जावें।

उस चौक में अधिकतम 5000 व्यक्ति बैठ सके इससे अधिक की जगह नहीं थी। श्री कोठारी जी की आयु उस वक्त लगभग 25–26 वर्ष की रही होगी। आपने कार्यक्रम की महत्ता का अंकन कर अनुमान लगाया कि इस कार्यक्रम में पूरे भारत के तेरापंथी श्रावकों का एक महाकुंभ एकत्रित होने वाला है जिसकी संख्या कम से कम 35–40 हजार से कम नहीं होगी इतनी छोटी जगह पर ये राष्ट्र स्तर का समारोह कैसे संपन्न होगा, जबकि इसी दिन इसी समारोह में तेरह दीक्षाऐं भी होने वाली है । आपने वहां के प्रौढ़ एवं बुजुर्ग महानुभावों को बड़ी मुश्किल से इस बात के लिये राजी किया कि समारोह का स्थान बदलकर नगर से 2 किलोमीटर दूर देव तलाई नामक स्थान पर किया जावे, जहां 50 हजार व्यक्तियों के बैठने की जगह के साथ साथ जरूरत अनुसार पार्किंग स्थल भी उपलब्ध है। गांव वालों को समझाने में आपको 3–4 दिन लगे। अंत में आपने सुझाया उसी स्थान पर समारोह हुआ। उस समारोह में लगभग चालीस हजार जनमेदिनी एकत्रित हुई थी। बाद में पूरे गांव ने आपकी इस दूरदर्शी सोच की भूरि भूरि प्रशंसा की।

आपके उर्वर मस्तिष्क का जीता जागता प्रमाण है ''विज्ञान समिति उदयपुर''। श्री कोठारी साहब को इस संस्थान के नींव का पत्थर कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस संस्थान के माध्यम से विगत 55 वर्षो में समाज हित के अनेक कार्य संपन्न हुए हैं

जिनमें ग्रामीण विकास, महिला सशक्तीकरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रचार–प्रसार, कृषि अनुसंधान, चिकित्सकीय परामर्श, प्रबुद्ध चिंतन प्रकोष्ठ, अकाल सहायता, ग्रामीण विकास में सहयोग आदि उल्लेखनीय प्रकल्प संपन्न हुए हैं एवं अब तक निरन्तरता लिए हुए हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के शब्दो में – ''विज्ञान समिति युग चेतना को जगाने वाली संस्था है'' जिस संस्था का अंकन आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी जैसे दार्शनिक महापुरुष के द्वारा उपरोक्त शब्दों में हुआ हो उस संस्था की स्थापना करने वाले चैतन्य मस्तिष्क डॉ. के. एल. कोठारी साहब ने विगत अर्ध शताब्दी में सैकड़ों अनुसंधान पत्र/शोधपत्र लिखे हैं जिनका प्रकाशन समय समय पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विभिन्न पत्रिकाओं में हुआ है। इन शोधपत्रों के प्रकाशन से कई विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन हुआ है।

तेरापंथ धर्मसंघ के ऐतिहासिक श्रावक ''श्रावक शोभजी'' के वंशज होने का सौभाग्य आपको मिला फलस्वरूप आप भी अपने पिताश्री की तरह ही सहज कवि है, आपकी रचनाएं आधुनिक शैली में विषय को सही–सही प्रतिपादित करती है। 9 वर्षो तक तेरापंथ सभा उदयपुर के अध्यक्ष एवं सन् 1985–86 में आचार्य श्री तुलसी अमृत महोत्सव का तृतीय चरण जो उदयपुर में मनाया गया उसके संयोजकीय दायित्व का सफल निर्वहन आप कर चुके हैं। सिद्वान्तों के साथ आपने कभी समझौता नहीं किया। तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए भी जहां कहीं आवश्यकता हुई आपने नेतृत्व वर्ग द्वारा अनावश्यक हस्तक्षेप को कभी स्वीकार नहीं किया। मेरे पूज्य पिताश्री स्वर्गीय श्री भंवरलाल जी कर्णावट की स्मृति में प्रदत्त ''बोधि सम्मान वर्ष 2014'' से आप सम्मानित हो चुके है।

आचार्य श्री भिक्षु का प्रथम पावस प्रवास केलवा के श्री चन्दप्रभु जी के मंदिर में स्थित उस ''अंधेरी ओरी'' को ऐतिहासिकता प्रदान करने हेतु सन् 1996 में वहां स्मारक बनाने की योजना बनी। मैं उन दिनों अखिल भारतीय तेरापंथ स्मारक सुरक्षा समिति का अध्यक्ष था। मंदिर के आस पास कोई खाली जगह उपलब्ध नहीं थी जहां स्मारक बनाया जा सके। मंदिर के ठीक सामने आपका पैतृक मकान था, मैं एवं श्री सवाईलाल जी पोखरना आपके अग्रज श्रीमान् फूलचंद जी साहब से मिले एवं निवेदन किया कि इस पूनीत स्मारक हेतु हमें आपके मकान की आवश्यकता है। आप उचित मूल्य लेकर यह मकान भिक्षु भूमि संस्थान, केलवा को दे देवे। उन्होंने फरमाया कि मैं अपने दोनो अनुज श्री मोहनलाल जी एवं श्री कुन्दन जी से राय करके जवाब दूंगा।

तीनों भाइयों की आपसी राय होकर आपने सीधे यही कहा, ''वैसे तो यह मकान हमारे लिये एक ऐतिहासिक धरोहर है जिसे आप एक करोड़ रु. दो तब भी हम बेचने को तैयार नहीं है किन्तु धर्मसंघ के भावी विकास को दृष्टिगत रखते हुए हम भी यह उचित समझते है कि यह **''अंधेरी ओरी''** एक तरह से तेरापंथ धर्मसंघ की गंगोत्री है। हमारे धर्मसंघ के

अनुयायियों को इस स्थल पर आने का आकर्षण बना रहे इस दृष्टि से इसे राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप दिया जाना हम भी आवश्यक समझते हुए यह मकान भिक्षु भूमि संस्थान को बिना कुछ भी प्रतिफल लिये सहर्ष भेंट करते हैं। यह है आपके पूरे परिवार का धर्मसंघ के प्रति समर्पण भाव जिसमें पहल आपकी रही है। इसी अंधेरी ओरी से निकला आलोक रूपी तेरापंथ धर्मसंघ, आज जैन धर्म की एक पहचान बन चुका है। उसे भी गंगोत्री की महत्ता का ध्यान रहे इस दृष्टि से आपने तीन वर्ष पूर्व ''आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान'' केलवा की स्थापना की जहां से आपके निर्देशन में आचार्य भिक्षु द्वारा स्थापित सिद्वान्तों का विश्लेषण करती हुई प्रतिमाह मासिक पत्रिका **'श्रद्धा'** निकलती है। 80 बसन्त पार कर लेने के पश्चात् आज भी कोठारी साहब पर्यावरण विशुद्धिकरण जैसी समसामयिक समस्याओं के निराकरण हेतु प्रयत्नशील रहकर नित्य नये अनुसंधान कर रहे हैं। आपका कर्मशील जीवन हम जैसों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करता रहता है।

ऐसे प्रखर वक्ता, कुशल प्रशासक, प्रोढ लेखक सादा जीवन उच्च विचार वाले, दूरदर्शी व्यक्तित्व डॉ. के. एल. कोठारी साहब के संबंध में स्मारिका प्रकाशित कर विज्ञान समिति श्लाघनीय कार्य कर रही है। मैं श्रीमान डॉ. के. एल. कोठारी साहब के स्वस्थ शतायु होने की मंगल कामना करता हूं।

अध्यात्म संग विज्ञान जोडकर करते नित्य नये मंथन
मंथन से महका करता है ज्यों ज्यों घिसता जाता चंदन
शोभा वंशज शेश, और शेश के तुम हो नंदन।
पीढी दर पीढी स्वर्ण तपा, तपकर के आज बना कुंदन।।...

लोक विज्ञान के प्रणेता

सुरेशचंद्र मेहता
प्रोफसर गणित (से.नि.)
कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, उदयपुर

श्री कुन्दनलाल जी कोठारी जिन्हें सामान्यतया डॉ. के.एल. कोठारी के नाम से जाना जाता है, एक सामान्य परिवार में जन्में किन्तु अपनी लगन और परिश्रम से अध्ययन करके M.Sc., Ph.D. की उपाधि प्राप्त की। फिर उदयपुर विश्वविद्यालय में अध्यापन, शोध व प्रसार कार्य करने हेतु असिस्टेंट प्रोफेसर के पद से सेवा के दौरान प्राचार्य (डीन) के पद ऊपर पहुंचे।

जब डॉ. कोठारी ने उदयपुर विश्वविद्यालय में सेवा प्रारंभ की उसी समय उनके मस्तिष्क ने झकझोरना शुरू कर दिया। उन्हें लगा कि सामान्यजन अशिक्षित है और जो उपाधि प्राप्त लोग भी हैं तो उन्हें विज्ञान की उपलब्धियों, नई नई प्रौद्योगिकी के बारे में बहुत कम जानकारी थी और जिन लोगों को इस तरह की जानकारी भी थी तो उनका वैज्ञानिक चिंतन नहीं था, वे अंधविश्वास से ग्रस्त थे। इस दुष्चक्र से सामान्यजन को बाहर निकालने का उनको मन हुआ और कुछ समान विचरों के मित्रों के साथ चिंतन मनन किया और 'विज्ञान समिति' की स्थापना कर डाली।

उत्साह के साथ 'समिति' ने आरंभ में गांवों में प्रदर्शनियां लगाई। छोटे छोटे समूहों में विज्ञान संबंधी वार्ताएं की और कृषि संबंधी परामर्श द्वारा कृषकों के जीवन को प्रभावित किया। इसी के साथ 'लोक विज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। पत्रिका का प्रकाशन 20–21 वर्ष तक बनाये रखना किसी योगी की साधना से कम नहीं था। मासिक पत्रिका के लिए धन की आवश्कता बहुत अधिक थी। डॉ. कोठारी ने अपने रिश्तेदारों, मित्रों और शुभचिंतकों की सहायता से इस कार्य को चलाया। केवल धन ही नहीं, इस कार्य के लिए कई अन्य शरीरिक व मानसिक कार्य भी करने होत थे। प्रकाशन सामग्री प्राप्त प्राप्त करना, उनमें संशोधन, परिवर्तन, अनुवाद करना, उन्हें सुन्दर लिपि में लिखना, छापाखाने तक समय पूर्व पहुंचाना और छापे की अशुद्धियों को सुधारना, छपी हुई पत्रिकाओं को लिफाफे में डालकर, डाक घर पहुंचाना, पत्रिका शुल्क इकट्ठा करना आदि सभी कार्य डाक्टर कोठारी के घर वाले एवं मित्र करते थे। लेकिन इस प्रकाशन 'लोक विज्ञान' ने जनमानस पर एक छाप छोड़ी।

'लोक विज्ञान' में प्रकाशित सामग्री के कई आयाम रहे हैं। कृषकों के लिए कृषि सम्बन्धी, पशुपालकों के लिए पशुपालन, पशु संवर्धन और दूध सम्बन्धी , गृहणियों के लिए व्यंजन व खाद्य सामग्री व शिशु पालन की जानकारी का लोक विज्ञान एक छोटा कोष है। लोक विज्ञान में 1970–71 के आस–पास भविष्य में कृषि (सन् 2000) में क्या क्रान्ति आएगी उस पर फोर्ड फाउन्डेशन का

प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया, इसी काल में कांच के तंतुओं से संदेश कैसे भेजे जाएंगे प्रकाशित हुए थे। आज हम जानते हैं कि इन्हीं कांच तंतुओं (Optical Fiber) पर सवारी करके संदेश और चित्र संसार को एक कोने से दूसरे कोने तक भेजे जाते हैं।

जिस समय लोगों ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी जब दूरभाष (Mobile Phone) 21वीं सदी के आरंभ में यह इतना काम आएगा जबकि एक लेख में यह भविष्यवाणी की गई कि (68–69 में) भविष्य में ऐसे दूरभाष का प्रचलन होगा जिससे किसी भी व्यक्ति को किसी समय, किसी जगह संदेश भेजे जा सकेंगे। कम से कम हिन्दी भाषा में तो यह पहली पत्रिका थी जिसमें भविष्य विज्ञान पर लेख लिखे गए। प्रकाशन की इसी श्रंखला में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक और धार्मिक प्रभावों की चर्चा की गई। लोक विज्ञान ने समय समया पर कई विशेषांक प्रकाशित किये जो वैज्ञानिक साहित्य की अनुपम धरोहर है। इनमें **मक्का विशेषांक**–बीज उत्पादन, फसल रक्षण, शंकर बीज और मक्का सम्बन्धि अनुसंधानों का इसमें विस्तृत विवेचन है। **कुक्कुट विशेषांक**–यह एक पूरी पुस्तक का अनुवाद है। 'कुक्कुट –प्रबन्धन' इसे बाद में पुस्तक रूप में भी प्रकाशित किया गया। विज्ञान विशेषाक– में प्रसिद्ध दार्शनिक व गणितज्ञ बर्ट्रेंड रसेल की पुस्तक Impact of Science on Society का अनुवाद है। इसी प्रकार सापेक्षवाद क्या है नोबल पुरस्कार विजेता लेव लेंडी की पुस्तक का अनुवाद। सरल भाषा में सापेक्षवाद को समझाया गया है। **नारी विशेषांक**– यह नारी सम्बन्धित कई वैज्ञानिक पक्षों पर एक अच्छा विशेषांक है। **अकाल विशेषांक**– 90 के दशक में उदयपुर में भयंकर अकाल पड़ा था। उस वर्ष पीछोला, स्वरूप सागर और फतह सागर सूख गये थे। इस वर्ष लोक विज्ञान का अकाल विशेषांक में अकाल के कारण निवारण का विस्तृत उल्लेख किया।

इसके अतिरिक्त भी अन्य कई विशेषांक भी प्रकाशित किये जिन की मुझे स्मृति नहीं है।'लोक विज्ञान' में रोचक व मनोरंजक जानकारियों के साथ डॉ. घोष नामक एक वैज्ञानिक के रूप में लिखा गया। शिशु गर्भधारण से उसके संपूर्ण विकास की जटिलताओं को समझाती हुई एक लेखमाला लिखी गई। जल की लेखमाला, शिशु रोगों की लेखमाला आदि अनेक लेख मालायें लिखी गई। शरीर के अंगों की आत्मकथा के कई लेख लोक–विज्ञान की उपलब्धि थी। लोक विज्ञान में विज्ञान में संसार की संक्षिप्त जीवनियां भी प्रकाशित की गई। बच्चों के लिए रोचक, तार्किक व ज्ञानवर्धक वैज्ञानिक सामग्री का समुचित समावेश था। लोक विज्ञान के सम्पादकीय भी राज्य व केन्दग्र की सरकारी नीतियों सम्बन्धी सुझाव होते थे।

बीस इक्कीस वर्षों तक लेखकों से लेखों के लिए आग्रह करना, अन्य भाषा के लेखों का अनुवाद करना, अशुद्धियां दूर करना उनको रोचक बनाना। यह सब सरल कार्य नहीं था। यह सब कुछ डॉ. कोठारी के संपूर्ण समर्पण से ही संभव हुआ। इस कार्य में कई मित्रों ने मदद की। किन्तु इस कार्य की आत्मा और दिमाग डॉ. कोठारी का ही था। ज्ञान की इस अथाह सम्पदा के बारे में ''साईन्स टूडे'' पत्रिका के सम्पादक का कहना था कि डॉ. कोठारी उदयपुर की जगह किसी बड़े शहर में रहो

और इस पत्रिका की कम से कम 30,000 पत्रिका छाप कर उन्हें बेचों। ''इंडियन एक्सप्रेस'' के प्रसिद्ध सम्पादक Ýd ekjk l ने लोक विज्ञान की भूरि भूरि प्रशंसा की। आर्थिक कठिनाइयों के कारण पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़ा। यह एक दुखद दिन था। काश! यह पत्रिका चल पाती।

विज्ञान समिति की अन्य गतिविधियों में एक उपलब्धि थी मावली पंचायत समिति के चंदेसरा गांव में 300 बीघा (58 हेक्टयर) बंजर भूमि में 50,000 पौधे लगाये और 4 वर्ष तक इनका रख रखाव करके इन्हें टेंकरो द्वारा पानी पिलाके 10–15 फुट के वृक्षों के रुप मे बड़ा किया। 50,000 पौधों से कम से कम 40,000 पौधे 5–6 वर्ष के वृक्ष बन गये। एक घना जंगल बन गया और उस बंजर भूमि में हजारों क्विंटल घास लगने लगी, जंगल में खरगोश और अन्य जंगली जानवरों ने भी जन्म लिया। आस–पास के कुओं में पानी बढ़ गया। इसके पश्चात इस वन को चंदेसरा ग्राम पंचायत के आग्रह पर इसे उन्हें सौंप दिया। परिणाम स्वरूप वर्ष दो वर्ष में ही इस वन का विनाश हो गया। इस कार्य में डॉ. कोठी के प्रयासों से ही, राज्य सरकार, हिन्दुस्तान जिंक, पेस्टीसाइड्स इंडिया से धनराशि और अन्य सामग्री प्राप्त हुई। इस कार्य की सफलता से परविन्दर पंवार(भारतीय प्रशासन सेवा) जो उदयपुर में थे (अभी अंतराष्ट्रीय बैंक के टैरिफ अधिकारी हैं) वे जब भीलवाड़ा कलक्टर बने तो उन्होंने विज्ञान समिति से आग्रह किया कि समिति भीलवाड़ा में उसी तरह का वन लगाये(चंदेसरा जैसा) और उन्हें इस कार्य के लिए आवश्यक धन राशि व अन्य सहायता देंगे। अन्य अफसर मालविका पंवारा(भारतीय प्रशासनिक सेवा) ने भी यह कार्य देखा था, बाद में वह भारत सरकार की ग्रामीण विकास सह सचिव बनी। उन्होंने भी ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान समिति को सहयाता देने का आग्रह किया। कुछ कारणों से यह संभव नहीं हुआ।

'विज्ञान समिति' ने चंदेसरा ग्राम पंचायत के सभी गांवों का वैज्ञानिक आर्थिक सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण में चंदेसरा ग्राम पंचायत के गांवों की गरीबी को कैसे मिटाया जा सकता है इसके कारण व समाधानों का वर्णन किया। इस सर्वेक्षण को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया व इसकी भूरि भूरि प्रशंसा हुई । संभवतया स्वैच्छिक संस्थानों में विज्ञान समिति ही ऐसी संस्था है जिसने इस तरह का सर्वेक्षण किया है।

आगे चलकर डॉ. कोठारी ने समिति कि लिए भूखण्ड खरीदा और अपने संपर्क से एक भव्य भवन का निर्माण कर लिया, अब समिति में कई गतिविधियां चलती है ओर कई लोग इस संस्था से जुड़े हैं। विज्ञान समिति की ही डॉ. कोठारी की जीवन कथा है। सोते, बैठते, जागते उनके लिए समिति ही सब कुछ है।

वे एक संवेदनशील कवि हैं। समाज की कई संस्थाओं, समितियों से वे जुड़े हुए हैं। वे दीर्घायु हों और समिति को और भी ऊँचाईग तक ले जाए। ...

जीवेम शरद शतम!

राज लोढ़ा
प्रबंध निदेशक
कॉटन प्रोडक्ट्स ऑफ इण्डिया, उदयपुर

डॉ. कुन्दन भाई को जन्म दिन की शत–शत बधाइयां।

मेरे प्रिय मित्र मार्गदर्शक सहयोगी।

हम कई संस्थाओं में साथ–साथ हैं, कई जगह साथ गये और सभी जगह की स्मृतियों आज भी सजीव है, यादों में सुरक्षित है। एक बार महावीर इंटरनेशनल के लुधियाना में वार्षिक कॉन्फ्रेन्स में साथ गए। पहली बार लुधियाना कॉन्फ्रेन्स आयोजित कर रहा था। पदाधिकारी भी नये व अनभिज्ञ थे। हम दोनों कॉन्फ्रेन्स के कुछ समय पूर्व वहां गये और सारा कार्यक्रम निश्चित करके पूरा विस्तृत में चार्ट बनाकर समझा दिया।

कॉन्फ्रेन्स के एक दिन पूर्व हम लोग पहुंच गए और वहां तैयारी की जानकारी लेने गया। भाई कुन्दन जी होटल में विश्राम कर रहे थे, वहां सब बिन्दुओं पर चर्चा करते करते 11 बज गए पर वहां तैयारी नहीं थी और कोई कॉन्फ्रेन्स को व्यवस्थित रूप से संचालित करने वाला नहीं था। हैरान, परेशान भाई कुन्दन जी को जगाया और उन्होंने मेरे साथ कांफ्रेन्स की विस्तृत तैयारी करवाई, अगले दिन कॉन्फ्रेन्स बहुत शानदार, सुव्यस्थित और सुचारू रूप से समाप्त हुई। कॉन्फ्रेन्स का सारा कार्यक्रम अपने हाथ में लेकर प्रभावशाली रूप से संचालित किया। भाई कुन्दन जी का व्यक्तित्व ऐसा है।

पुनः जन्म दिन की अनेकानेक शुभकामनाएं, अभिनन्दन। चार पंक्तियां आपके लिए –

तुम्हें जन्मदिन की बधाई बधाई
सुमन से सुंगधित रहो मुस्कराओ
जीवेम शरद शतम् व्रत निभाओ
जीओ लोक हित और आशीष पाओ ...